Year-78

परोपकारी

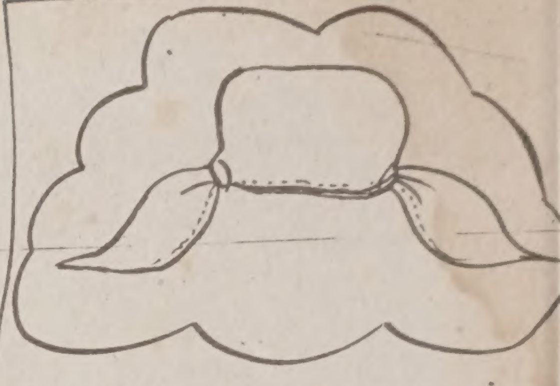


बात-बे-बात की



जनता सरकार

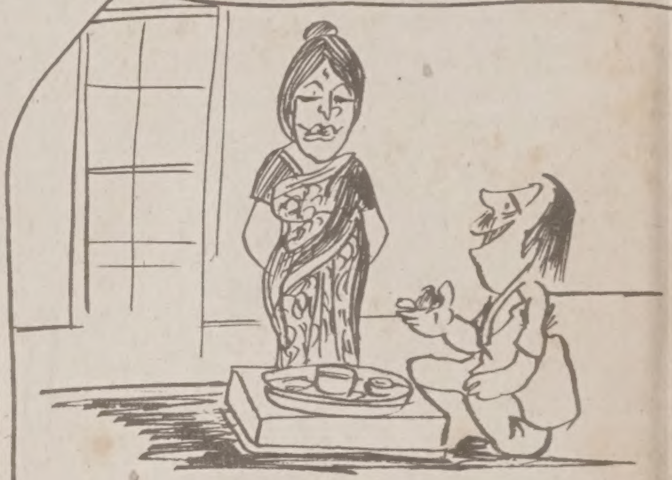
की १६ महीनों की उपलब्धियां



श्री राजनारायण छाप पटका सारे विश्व में मूर्खता के ट्रेडमार्क के रूप में मशहूर हो गया है।



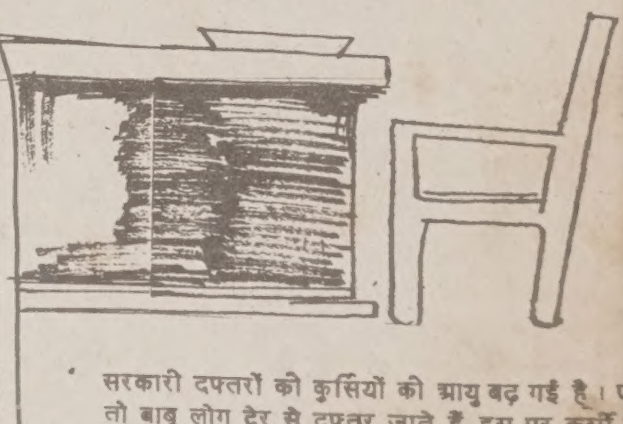
पति अब ज्यादा खुश हैं बीबी सोने का चेन मांगे तो उसे आसानी से चेन खींचने वालों का डर दिखा कर टरकाया जा सकता है।



दाल-सब्जी में नमक ज्यादा पड़ने पर पति-पत्नी में अब झगड़े नहीं होते। क्योंकि दाल-सब्जी महंगी होने के कारण गृहणियां चटनी जितनी तो कुल ही दाल-सब्जी पकाती हैं उनमें नमक ज्यादा लगने का सवाल ही नहीं उठता।



लोगों को दिल बहलाने के लिए अब रहस्य-रोमांच के नाविल नहीं खरीदने पड़ते। रोज का अखबार उठा कर पढ़ने पर जनता पार्टी के आपस के संघर्ष, लड़ाई, झगड़े, दांव-पेच और गला काट पैंतरे जासूसी नावलों का ही मजा देते हैं।



सरकारी दफ्तरों की कुर्सियों की आयु बढ़ गई है। एक तो बाबू लोग देर से दफ्तर जाते हैं इस पर कुर्सी पर कम और कैंटीन की अधिक शोभा बढ़ाते हैं।



स्तुओं के अंधाधुंध चढ़ते भाव सुनते-सुनते दिल को
तने हिचकोले लगे हैं कि अब दिल इनका आदि हो
या है। अगर रात को भूत से सामना हो जाये तो
हले की तरह दिल धक् से नहीं रह जायेगा। न ही
मुँह से चीख निकलेगी।



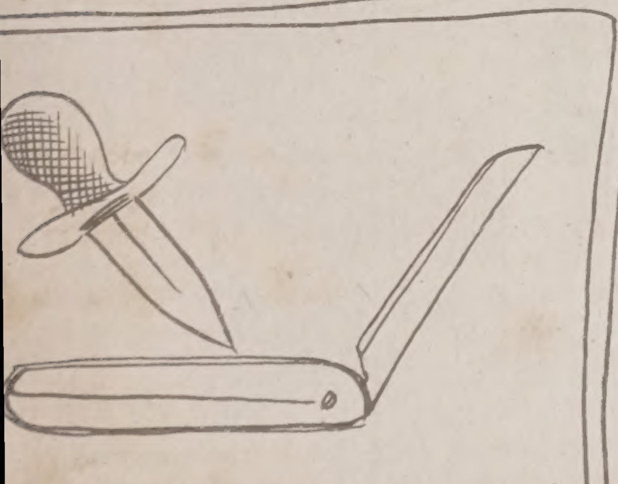
हरियाणा के सूरज कुण्ड पर्यटक केन्द्र को मुफ्त में ही
पब्लिसिटी मिली और प्रसिद्ध हो गया।



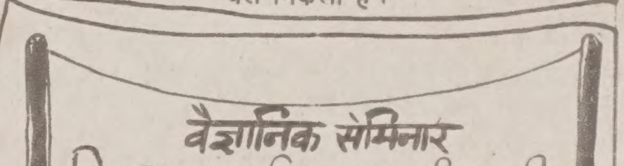
नकली शराब बनाने व बेचने वालों के रूप में रोजगार
के नये अवसर पैदा हो गये हैं।



वकीलों की चांदी हो गयी है। जांच आयोग की भरमार
के कारण टटपूंजिये वकीलों की वकालत भी धड़ल्ले से
चल निकली है।



चक्कू-छुरियों की बिक्री बढ़ गयी है।



गांवों के उत्थान की बात करना फैशन बन गया है।
सरकारी स्तर पर हर विषय के साथ उसका नाता
जोड़ने की कोशिश करना फर्ज बन गया है (चाहे तुक
हो या न हो)।

आपस की बातें

चाचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

गुरदास निरोध—बरेली : चाचा जी, मेरी भविष्यवाणी है कि १९८० में एशिया में उथल-पथल होगी और भारत को लड़ाई में भाग लेना पड़ेगा। आपकी भविष्यवाणी क्या है ?

उ० : हमें तो अब भी कहीं शांति नजर नहीं आती हर तरफ उथल-पुथल ही हो रही है। चाहे दुनिया का नक्शा उठा कर देख लीजिये हो सकता है बरेली में शान्ति हो। वहाँ बहुत बड़ा पागलखाना है।

****

श्याम लाल के० राय—काटेमानेवली, कल्याण : चाचा जी, मेरे शरीर में बहुत कमजोरी आ गई है। क्या आप डा० झटका से पूछ कर इसका कोई इलाज बतायेंगे ?

उ० : इलाज तो हम बता देंगे। पर यह सोच लिजिए कि आज आप कमजोरी को रो रहे हैं कल आप शरीर को रोयेंगे।

कमल किशोर कपूर—अमरोहा : चाचा जी अमरोहे में एक आप से बड़ा बातूनी है। आपने यह स्वीकार न किया तो हम सरकार से मांग करेंगे कि आप पर आयोग बिठा कर जाँच कराई जाए।

उ० : आपसे और क्या उम्मीद हो सकती है ? आजकल का चलन ही ऐसा है। पहले लोग जिसे हाथी पर बिठाते हैं फिर उस पर हाथी बिठा देते हैं। पर एक बात हम आपको बता दें। श्री मोरारजी देसाई की तरह हम भी आपकी धमकियों से डरने वाले नहीं आपके इस 'चाचा भाई देसाई' के सारे खाते पूरे हैं। बस इन्कम टैक्स का पूरा नहीं है। मतलब है टैक्स तो है, पर इन्कम नहीं है।

हरगून जसवानी—मन्डला : चाचा जी, इन्साफ की तराजू कब डगमगा जाती है ?

उ०: जब बड़े मंत्रियों के बीच में उनकी अपनी "फिल्म किस्सा कुर्सी का" चलती है और दूसरों पर दर्जनों कमीशन बिठाने वालों से मांग की जाती है कि अब अपने बेटे पर कमीशन बिठाओ। और बड़ा नेता यह देख कर घबरा जाता है कि "अब तक तो वह हाथी पर बैठा था अब हाथी उसपर बैठेगा।"

****

के०पी० अरोड़ा—काशीपुर : चाचा जी, चाची जब आप का कहना नहीं मानतीं तो आप क्या करते हैं ?

उ० : वही, जो पिछले पचास साल से करते आ रहे हैं। अपना सर दीवार में दे मारते हैं, पर सर और दीवार के बीच में तकिया रख कर। एक चीज बचाने के लिये, वह है दीवार का प्लास्टर।

अनसर सईद—लखनऊ : प्यारे चाचा जी जरा इस शेर का मतलब समझाइये :

जुल्फें भी हैं, गंजा भी, कैसा सरे जानां है,
थोड़ा सा गुलिस्ताँ है, थोड़ा सा बियाबां है।

उ० : शायद किसी शायर ने हमारे सर की हालत देख कर यह शेर कहा है। और सरासर यह इस सर का ही कमाल है जो टी० वी० पर तबस्सुम ने अपने प्रोग्राम का नाम रखा है, 'फूल खिलें हैं गुलशन गुलशन' सच पूछिये तो बात इससे भी आगे की है :



देख के हमको नाई हमारा,
कैंची लाता मेड इन जर्मन।
हम बोले बस शेव बना दो,
कटिंग को छोड़ो भाई जुम्मन।
गिनती के बस आठ बाल थे,
देख के टूटा नाई का मन।
फूल खिले हैं गुलशन गुलशन,
लेकिन अपना-अपना दामन।
ये है अपनी-अपनी किस्मत,
मेवा खाये कोई खाये है जामन।

सभी को मिलती आप...
हर कोई है क्या आर...

योगेश कुमार अग्रवाल—...
क्वालिफिकेशन क्या है ?
उ०: हम ने हर प्रकार की...
है। प्रश्नों के उत्तरों से इस...
लीजिए।

सुन्दर सिंह बाबलू—मो...
जी क्या यह जरूरी है...
दीवाना पढ़े और दीवाना...
उ०: हर चीज के साथ स...
है :
अच्छी सूरत भी क्या बुरी...
जिसने डाली बुरी नजर ड...
उसका दीवाना पढ़ना है...
जिसने दीवानगी न कर ड...

राम अवतार—करनाल...
को अगर मौत मिल जाये...
देखकर डर क्यों जाता है...
उ०. इस बात के कारण कि...
दो गंडेरियां मांगो तो...
छिलके भी नहीं देता। औ...
है जैसे हमने मंत्रीपद मांग...
बात कुछ अजीब लगे तो...
लीजिये, मंत्रीपद मिला तो...
जैसे मौत मिली हो ?

माया कुमारी—महाराज...
दीवाना पढ़ती हूं मुझे...
कि दीवाना नियमित रूप से...
शित नहीं होता। कभी र...
है, कभी बुधवार को तो...
को।
उ०: आप की शिकायत स...
लिये हमें खेद है, भविष्य...
लाने की पूरी कोशिश की...

आपस की...
दीवाना सा...
८-बी, बहादुरशाह...
नई दिल्ली-१...

बन्द करो बकवास


ऐ वतन, ऐ वतन मुझको तेरी कसम, तेरी राह में जां तक लुटा जायेंगे
बन्द करो बकवास, 'वतन' की टिकटों के लिये ही तो लड़ाई हो रही है। ऐसे गाने गा के लोगों को ज्यादा उकसा रहे हो।
ADVANCE
आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे
बन्द करो बकवास, आंख में मच्छर चला गया था इसलिये आंख बन्द की थी, तुम्हें देख के आंख नहीं मारी थी।
यह जो मुहब्बत है ये उनका है काम
बन्द करो बकवास, खुद तो कभी मुझे किश्ती की सैर कराते नहीं दूसरे करते हैं तो उन्हें पागल बताते हो.

फर्स्ट अप्रैल

—राजीव कुमार

यदि आपको हमारे चचा के कमरे में जाने का मौका मिले, तो आप देखेंगे, कि उनके हर कमरे में एक रिवालविंग कैलेंडर नजर आयेगा और आपको उस पर आश्चर्य होगा। मगर जो लोग उनकी भूलने की आदत से परिचित हैं, उनका कहना तो यह है कि हर वक्त चाचा जी के हाथ में एक कैलेंडर होना चाहिए।

अब आप स्वयं गौर कीजिए कि वह घर से तारीख मालूम करके चलते हैं और रास्ते में भूल जाते हैं। चलते-चलते जब उन्हें याद आती है, तो किसी राहगीर को रोक कर पूछते हैं—'अरे भाई, जरा सुनिए तो !···हां, तो मैं आपसे क्या कह रहा था ?···अरे, हां याद आया !···वह जरा यह तो बताइए कि कौन-सी तारीख है ?'

'जी, आज चौबीस तारीख है।' राहगीर जवाब देता। 'ओह, वह तो ठीक है ! यह तो मैं भी जानता हूं कि आज २४ ता० है। मगर यह तो बताओ कि आज दिन कौन सा है।

'जी, दिन तो इतवार है।' राहगीर जवाब देता 'अच्छा साहब, खुश रहो ! जियो, और, और जिन्दगी भर जियो ! अगर आप आज यह न बता देते तो मैं सीधा दफ्तर जाता और दफ्तर बन्द देखकर अपने बाल नोंच लेता।

'बाल नोंचने लगते।' राहगीर कहता 'पर बाल नोंचने से दफ्तर तो न खुलता।'

'ठीक है !' चाचा कहते—'मगर तुम जानो, इस तरह बाल नोंचने के बाद हजामत के पैसे बच जाते और फिर मैं बड़ी शान से घर आता।'

'बहुत खूब', राहगीर कहता और आगे चल पड़ता। अब आप चाचा की इस बात से अच्छी तरह अन्दाजा लगा सकते हैं के वे कितने होशियार होंगे।

'वह हम लोगों पर ऐसा रोब गांठते हैं कि तौबा भली ! मगर मेरे बड़े भैया उनसे जरा भी नहीं डरते और हमेशा उनकी बात काटने का मौका देखते हैं, पर चाचा का कहना था के वह आज तक अप्रैल फूल नहीं बने। पर सच तो यह है कि वो कई बार फूल बन चुके हैं। हां, हम लोगों के सामने वो कभी फूल नहीं बने। इसलिए हम यह बात खामोशी से सुन लेते। पर मेरे भैया और उनके दोस्त कुमार साहब कहां मानने वाले थे। वे चाचा को इस बार फूल बनाने का प्रण कर चुके थे। इस षड्यन्त्र में उन्होंने मुझे शामिल करते हुए कहा—'भाई राजीव ! तुम्हें एक काम करना है।'

'यह तो मेरी खुशकिस्मती है भैया।' मैंने कहा 'अच्छा, तो सुनो।' भैया ने कहा —'यह बात किसी और को मालूम न हो पाये।'

'नहीं-नहीं, ऐसा नहीं होगा ! आप बेफिक्र रहिए।' फिर भाई साहब ने मेरे कान में कहा कि मुझे क्या काम करना है।

दूसरे दिन भैया चाचा के यहां गये ! और बोले—'चाचा जी ! यह जानकर आपको जरूर प्रसन्नता होगी, कि मैं इंटरव्यू में सफल हो गया हूं !'

'अच्छा, तो फिर मिठाई खिलाओ।'

'हां-हां, जब आप कहिए।' भैया ने कहा।

'तो बेटे तुम मुझे टालना चाहते हो।' चाचा बोले। 'नहीं-नहीं, चाचा ! आप दो अप्रैल को आइए। उस दिन मैंने अपने दोस्तों को डिनर दिया है।'

'तो फिर धोखा न हो' चाचा ने उठते हुए कहा। और आज चाचा की दावत थी। हम कुमार साहब और भैया चाचा का इन्तजार कर रहे थे। भाई साहब को इतनी बेचैनी थी, कि टहल-टहल कर न जाने कितनी सिगरेट पिए जा रहे थे। फिर उन्होंने पूछा—'क्यों राजीव तुम भूल तो नहीं गए।'

'नहीं भैया, ऐसा कैसे हो सकता है ?' मैंने कहा—'कहीं चाचा तो नहीं भूल गए।'

'नहीं, वह सब कुछ भूल सकते हैं पर दावत पर आना नहीं''अभी भैया की बात पूरी न हुई थी कि चाचा के आने की सूचना मिली। हम लोग पर्दे के पीछे हो गए। खाली मेज के चारों ओर कुर्सियां रखी थीं और एक प्लेट में बड़े अक्षरों में लिखा था।

'फर्स्ट अप्रैल'।

हम लोगों को हंसाने के लिए यही दृश्य काफी था कि पूज्य चाचा जी झूमते हुए अपनी छड़ी घुमाते हुए कमरे में दाखिल हुए। 'फर्स्ट अप्रैल' का पर्चा देखते ही उनके तन बदन में आग लग गई। 'नहीं-नहीं; यह कभी नहीं हो सकता। आज तो दो अप्रैल है। मैं 'फूल' नहीं बन सकता ! वह बड़बड़ाए।

'हां, न बनिये ! प्लेट साफ कीजिए।' कुमार भाई ने कहा।

'प्लेट साफ करूं ? क्या मैं कोई नौकर हूं ? प्लेट तो नौकर साफ करते हैं।'

'इसलिए !' कुमार भाई ने कहा।' आपको बुलाया गया था। प्लेट बहुत गन्दी थीं।'

'यह तुम लोग मेरा मजाक उड़ा रहे हो।' चाचा ने पर्दे की ओर मुड़ते हुए कहा —'मैं कुमार की और तुम्हारी हड्डियां तोड़ दूंगा।'

मगर हड्डियां तोड़कर तो अस्पताल ले जाना होगा। पर्दे के पीछे से भैया ने कहा और हम लोगों का जोरदार कहकहा लगा।

और चाचा हम सबको ठीक करने के वास्ते छड़ी लेकर पर्दे की ओर लपके हम सब बगल वाले दरवाजे से घर में दाखिल हो गए।

'क्या बेहूदगी है ?' हम लोगों को 'फादर' की भारी आवाज सुनाई दी।

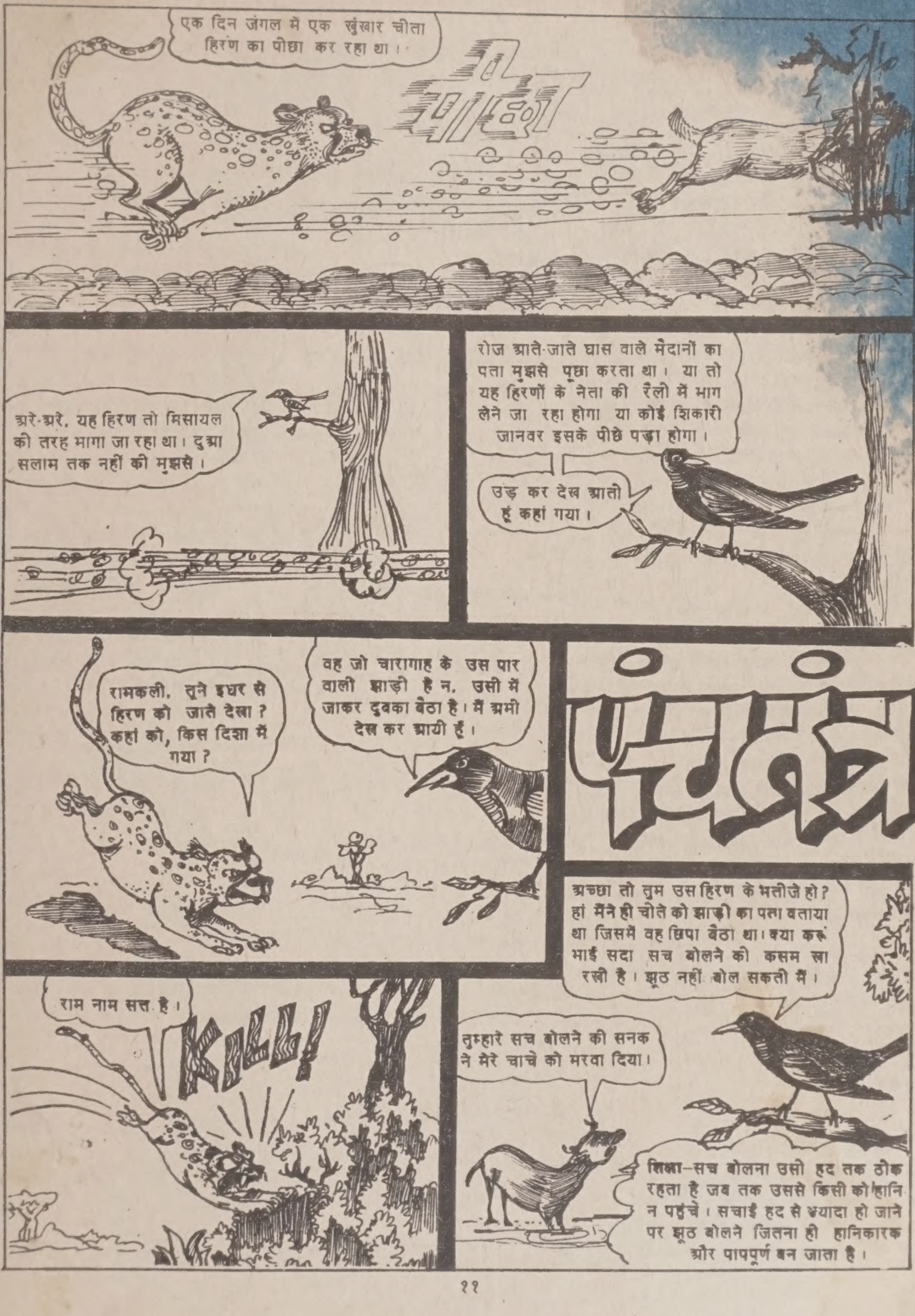
चाचा घर में दाखिल होते हुए बोले —'तुम लोगों ने तो बदतमीजी की हद कर दी है यह जबरदस्ती का अप्रैल फूल खूब रहा यानी आज २ अप्रैल है और यह बेहूदे मुझे फर्स्ट अप्रैल फूल बना रहे हैं। मैं इन सब की खोपड़ी सर से उड़ा दूंगा। मेरे पास पिस्तौल का लाइसेन्स है।

फादर मुस्कराते हुए चाचा से बोले— 'अरे भाई, आज तो वाकई फर्स्ट अप्रैल है।'

'जी, नहीं !' चाचा गुर्राए—'तो गोया आप भी बेवकूफों का साथ दे रहे हैं। आज हकीकत में दो अप्रैल है। मैं कैलेंडर देखकर आया हूं।

'कैलेंडर देखकर आ रहे हो।' हम लोगों ने हंसते हुए कहा—'मगर आपको क्या मालूम कि आपके कैलेंडर की तारीख बदल दी गई थी, यानी ३१ मार्च के बजाय फर्स्ट अप्रैल और आपने सुबह उठकर उस १ अप्रैल को दो अप्रैल में बदल दिया हालांकि वह फर्स्ट अप्रैल थी, यानी जो आज है।'

चाचा जी यह सुनकर सन्नाटे में आ गए। काटो तो खून नहीं। हम लोग मुस्करा मुस्कराकर चाचा का मजाक बना रहे थे और चाचा दिल ही दिल प्रार्थना कर रहे थे—कि आइन्दा इन लड़कों से पाला न पड़े।


एक दिन जंगल में एक खूंखार चीता हिरण का पीछा कर रहा था।
अरे-अरे, यह हिरण तो मिसायल की तरह भागा जा रहा था। दुआ सलाम तक नहीं की मुझसे।
रोज आते-जाते घास वाले मैदानों का पता मुझसे पूछा करता था। या तो यह हिरणों के नेता की रैली में भाग लेने जा रहा होगा या कोई शिकारी जानवर इसके पीछे पड़ा होगा।
उड़ कर देख आती हूं कहां गया।
रामकली, तूने इधर से हिरण को जाते देखा? कहां को, किस दिशा में गया?
वह जो चारागाह के उस पार वाली झाड़ी है न, उसी में जाकर दुबका बैठा है। मैं अभी देख कर आयी हूं।
पंचतंत्र
राम नाम सत्त है।
KILL!
अच्छा तो तुम उस हिरण के भतीजे हो? हां मैंने ही चीते को झाड़ी का पता बताया था जिसमें वह छिपा बैठा था। क्या करूं भाई सदा सच बोलने की कसम खा रखी है। झूठ नहीं बोल सकती मैं।
तुम्हारे सच बोलने की सनक ने मेरे चाचे को मरवा दिया।
शिक्षा—सच बोलना उसी हद तक ठीक रहता है जब तक उससे किसी को हानि न पहुंचे। सचाई हद से ज्यादा हो जाने पर झूठ बोलने जितना ही हानिकारक और पापपूर्ण बन जाता है।

धारावाहिक उपन्यास

दूसरी आत्मा

भाग ७

लेखक संगीता

दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ौस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है जो रात को सिसकियां भरती है और दशरथ-दशरथ पुकारती है। इस डर से उस कोठी में कोई नहीं आता था।

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी।

आगे पढ़िये

'कोई बात नहीं—गौना परीक्षा के बाद हो जाएगा।'

'क···क···क्या मतलब ?'

'फेरे कल कर लेंगे गौना बाद में देखा जाएगा।'

'क···क···कल।'

'हाँ बेटे—कल ही—।'

'किन्तु···बापू···यह इतनी जल्दी तुम्हें मेरी शादी की चिन्ता क्यों हो गई ? कल तक तो तुम सीता, लाजो और चुन्नी की शादी के लिए चिन्तित थे ?'

'इसीलिए तो अब तेरी शादी पहले कर रहे हैं कि तेरी शादी के बाद इन तीनों की शादी के बारे में कोई चिन्ता नहीं रहेगी।'

'क्या मतलब ?'

'ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते।'

'साफ-साफ बात करो ना बापू।'

'अरे कौशल्या···जरा तू बता दे इसे खुशखबरी।'

'बेटे—' कौशल्या ने खुशी से कहा, 'जानता है तू···तेरी शादी किससे हो रही है ?'

'किससे ?'

'तेरे बापू के मालिक सेठ रघवर प्रसाद की इकलौती बेटी से···।'

'नहीं—!!'

दशरथ की आँखें आश्चर्य से फटी रह गई।

'और क्या बेटे···स्वयं सेठ ने बात की है···क्योंकि उन्हें दिल का दौरा पड़ा है और वह मरने से पहले ही लड़की के फेरे कर देना चाहते हैं—तू जानता है सेठ जी करोड़पति हैं और रचना उनकी इकलौती बेटी है—रचना का पति बनने के बाद तू स्वयं करोड़पति बन जाएगा और फिर···न सीता की शादी की चिन्ता रहेगी और न लाजो या चुन्नी की शादी की चिन्ता।

'और बेटा—फिर हम इस गन्दे स्थान में भी नहीं रहेंगे—बंगले में चले जाएंगे।' ज्वाला प्रसाद ने कहा, 'सुन्दर-सा बंगला होगा—कार होगी···अब तक जीवन में जो दुःख और कष्ट सहे हैं उनसे मुक्ति मिल जाएगी।'

दशरथ को ऐसे लग रहा था जैसे उसके पैरों तले से जमीन सरकती जा रही हो···आंखों में अंधेरा-सा छा रहा था··· कल्पना में रानी की सूरत उभर आई थी—साथ ही रानी की आवाज उसके कानों में गूंज रही थी—

तुम्हें कोई अमीर लड़की मिल जाएगी तो उसके लिए मुझे छोड़ दोगे···

दशरथ को ऐसे लगा जैसे किसी ने उसका दिल मुट्ठी में जकड़ कर उसका सारा खून निचोड़ लिया हो—वह अनायास बड़-बड़ाया—

'नहीं—नहीं—यह असम्भव है।'

ज्वाला प्रसाद और कौशल्या ने आश्चर्य से उसे देखकर पूछा।

'क्या असम्भव है बेटे ?'

'ब···ब···बापू मैं सेठ साहब की लड़की से शादी नहीं कर सकता।'

'क्यों ?' ज्वाला प्रसाद का मुँह खुला सा रह गया।

'यह तू क्या कह रहा है बेटे ?' कौशल्या ने आंखें फाड़कर पूछा।

'मां—मैं सच कह रहा हूं—मैं रचना से शादी नहीं कर सकता।'

सीता, लाजो और चुन्नी के चेहरे भी सफेद पड़ गए···उन्हें ऐसे लगा जैसे स्वयं उन तीनों की शादियाँ रुक गई हों···वह सदा कुँवारी रहेंगी।'

कौशल्या ने बेचैनी से पूछा—

'क्यों ? आखिर क्यों तू रचना से शादी नहीं करेगा।'

'मां मैं एक और लड़की से प्यार करता हूं।'

'क्या ?'

'हाँ माँ—मैंने उस लड़की को शादी का वचन दिया है।

ज्वाला प्रसाद का चेहरा एकाएक गुस्से से लाल हो गया···आँखें अंगार बरसाने लगीं···उन्होंने दशरथ को खूंख्वार नजरों से घूरकर पूछा—

'कौन है वह लड़की !'

उसका नाम रानी है।'

'क्या करता है उसका बाप ? कितनी दौलत है उसके घर में ?'

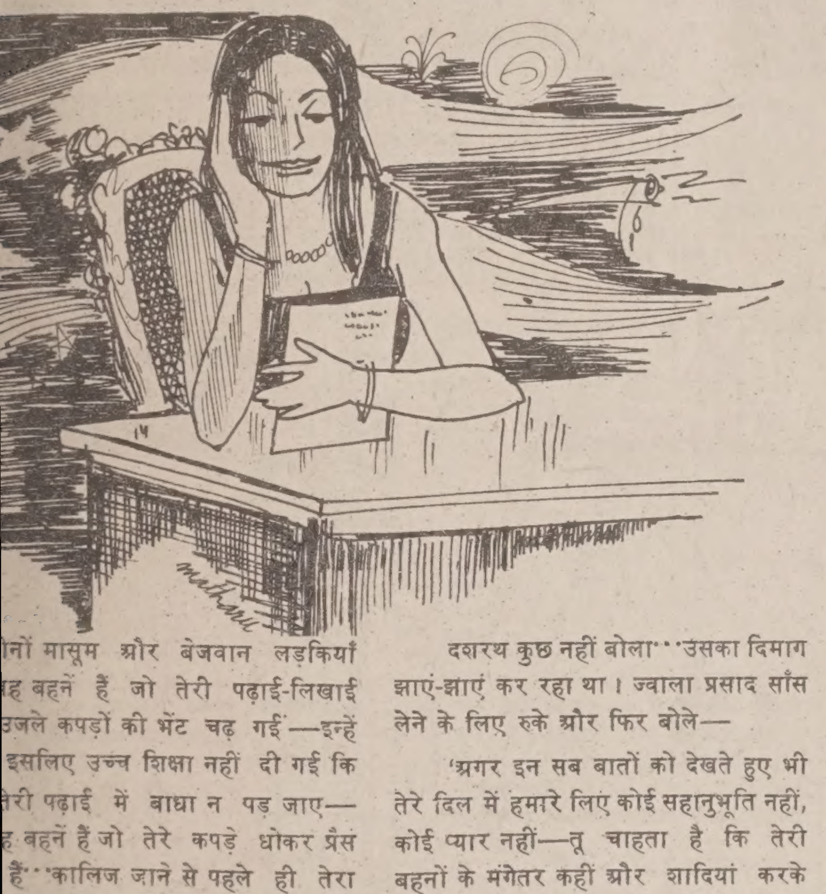
'वह लोग भी हमारे समान साधारण निम्न मध्य-वर्ग के लोग हैं।'

'हूं—।' ज्वाला प्रसाद ने फुंकार कर कहा, 'और उन भिखमंगों के लिए तू यहाँ

जीवन भेंट चढ़ा देगा ।'

'बापू—!!'

'अरे नीच…तेरे जन्म को अभी आठ
हुए…तू एक लड़की से मिला और
इतना प्रबल प्रेम करने लगा कि तू
ी भूल गया…मैं तेरा बाप हूं और
ल्या तेरी माँ है…तू मेरा खून है—
ल्या ने नौ महीने तुझे पेट में रखा है…
ढाई बरस छाती से लगाकर दूध
या है—मैंने इस बुढ़ापे में इन कमजोर
यों से परिश्रम करके तुझे खिलाया-
ा है इस आस पर कि तू बड़ा होकर
ी तरह नौकर हो जाएगा तो मेरे बुढ़ापे
हारा बनेगा—तू यह भूल गया कि



ीनों मासूम और बेजवान लड़कियाँ
ह बहनें हैं जो तेरी पढ़ाई-लिखाई
उजले कपड़ों की भेंट चढ़ गईं—इन्हें
इसलिए उच्च शिक्षा नहीं दी गई कि
ेरी पढ़ाई में बाधा न पड़ जाए—
ह बहनें हैं जो तेरे कपड़े धोकर प्रैस
हैं…कालिज जाने से पहले ही तेरा
तैयार करती हैं…तेरे जूतों पर
करके रखती हैं…तेरे सिर में हल्की-
पीड़ा हो तो तीनों रात-रात-भर
र तेरी सेवा करती हैं—
्या इन सबके प्यार, इनकी सेवा का
ल है कि तू एक अजनबी लड़की के
ो तुमसे केवल कुछ महीने ही पहले
है, हम सबकी खुशियों पर पानी फेर
सीता और लाजो की डोलियाँ अभी तक केवल इसलिए नहीं उठीं कि मैं उनके विवाह के लिए अभी धन नहीं जुटा पाया —और मेरा यह लिबास देख…कब से एक ही जोड़ा धो-धोकर पहन रहा हूं…तेरी माँ और बहनों के पास फटे-पुराने कपड़े हैं…किसी के पास एक भी जोड़ा तो ऐसा नहीं जो किसी उत्सव या शादी-विवाह पर पहना जा सके…और देख इस घर की छत को जो हर बरसात में टपकती है…

'एक तू सेठ साहब की बेटी से शादी कर लेगा तो हमारे सब दुःख दूर हो जाएंगे …तेरी बहनों का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा—तेरी माँ का बुढ़ापा आराम से कटेगा।

दशरथ कुछ नहीं बोला…उसका दिमाग झाएं-झाएं कर रहा था। ज्वाला प्रसाद साँस लेने के लिए रुके और फिर बोले—

'अगर इन सब बातों को देखते हुए भी तेरे दिल में हमारे लिए कोई सहानुभूति नहीं, कोई प्यार नहीं—तू चाहता है कि तेरी बहनों के मंगेतर कहीं और शादियां करके अपने घर बसा लें और तेरी बहनें जीवन-भर के लिए कुँआरी बैठी रहें—अगली बरसात में इस घर की छत गिर पड़े और हम सब इसके नीचे दबकर मर जाएं—तो फिर जैसे तेरी इच्छा…निकल जा यहाँ से …आज से हमारा तेरा कोई सम्बन्ध नहीं —मैं सेठ जी से कह दूंगा कि मेरा अयोग्य बेटा मेरी बात मानने को तैयार नहीं—फिर वह मुझे नौकरी से निकाल देंगे…कोई बात नहीं, मैं मजदूरी करके अपना, कौशल्या का और बेटियों का पेट भर लूंगा…जब तक इन बूढ़ी हड्डियों में थोड़ा भी बल है। मैं काम करता रहूंगा—लेकिन तुझ जैसे अयोग्य और कृतज्ञ बेटे का उपकार लेकर जिन्दा नहीं रहूंगा—अभी-अभी तू अपना बक्स उठा और यहाँ से चला जा—और हाँ आयन्दा कभी इस दहलीज पर कदम मत रखना।'

दशरथ अभी तक सन्नाटे में खड़ा था। ज्वाला प्रसाद ने गुस्से से कहा—

'मैं कहता हूं निकल जा यहाँ से।'

अचानक सीता ने दशरथ की बाँह पकड़ ली और रोती हुई बोली—

नहीं-नहीं भैया…मैं…मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।'

'भैया—।' लाजो भी दशरथ से लिपट गई और बोली, 'मैं नहीं जाने दूंगी तुम्हें भैया…कभी नहीं जाने दूंगी।

चुन्नी भी भाई से लिपट गई। ज्वाला प्रसाद ने कहा—

'अरे धिक्कार है ऐसे नीच भाई पर—बहनें अपना सब-कुछ बर्बाद होने पर भी भाई को छोड़ना नहीं चाहतीं…और भाई टस से मस नहीं होता—अच्छी बात है…घासलेट उठाकर इन तीनों पर छिड़क दे और आग लगाकर निकल जा यहाँ से—।'

ज्वाला प्रसाद गुस्से से भरे तेजी से अन्दर वाले कमरे में चले गए। दशरथ सन्नाटे में खड़ा रह गया…तीनों बहनें अब भी उससे लिपटी हुई सिसकियाँ भर रही थीं।

□ रचना जाने कितनी रात गए सोई थी। सुबह जब उसकी आँख खुलीं तो रोशनी खासी फैल चुकी थी। रचना आंखें खोले छत को तकती रही। एकाएक उसे डैडी की बीमारी का ध्यान आया और वह हड़बड़ाकर उठकर बैठ गई। उसने सामने रखी टाइम-पीस को देखा…दिन के दस बजे थे…रचना का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। वह जल्दी-से बिस्तर से उतरने लगी तो एक नौकरानी अन्दर आई और मेज पर रखी चाय की प्याली देखकर वह चौंककर आश्चर्य से रचना की ओर देखकर बोली—

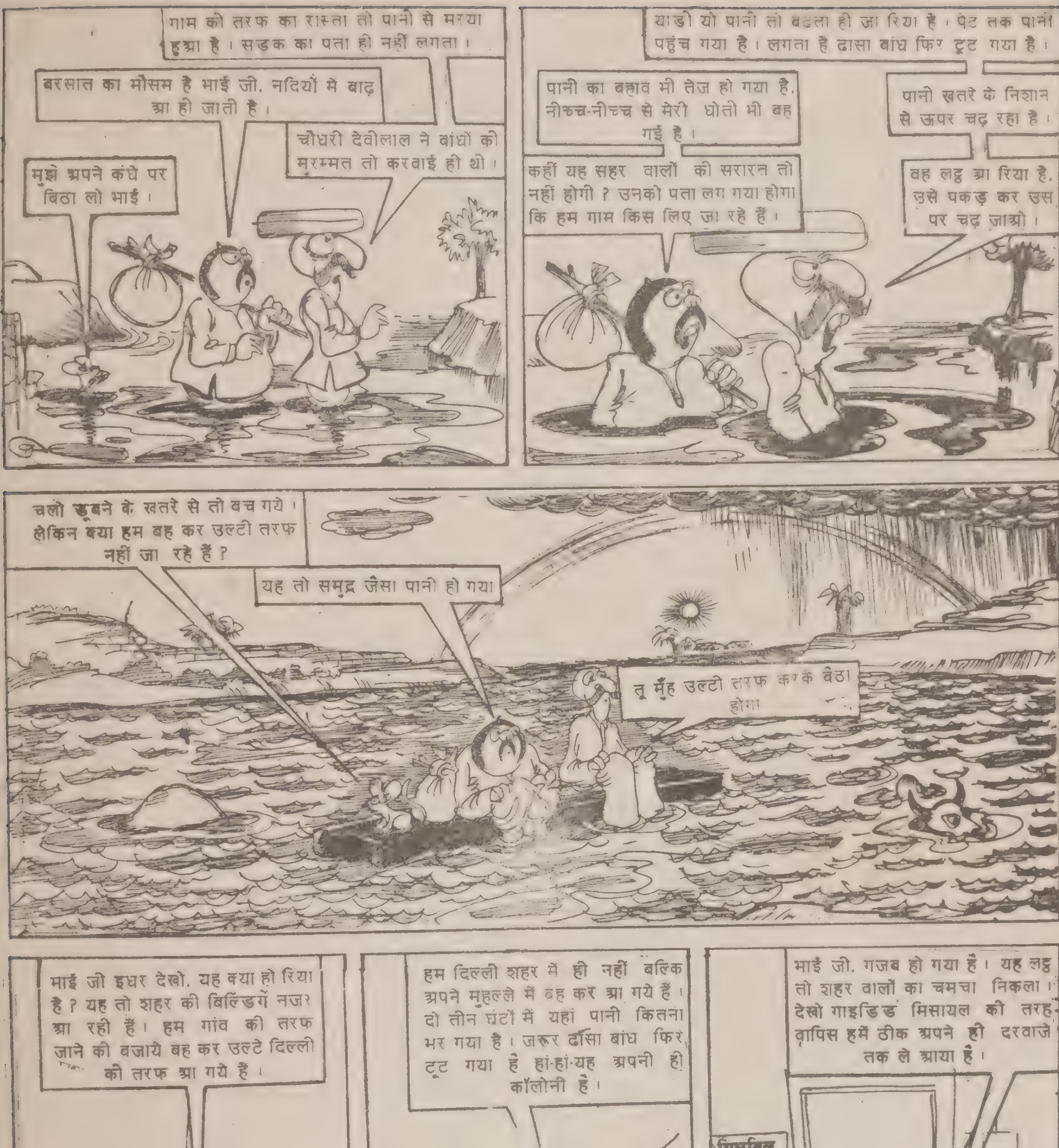
'अरे…छोटी मालकिन…आज आपने बैड-टी नहीं ली ?'

(पृष्ठ ३८ पर)

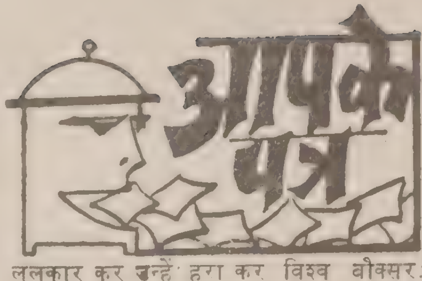

कई दिन हो गये थम दोनों दफ्तर जाने का नाम नहीं ले रिये हो। थमारी क्या सलाह है? दफ्तर बन्द करने की सलाह है? रूबी कब तक दफ्तर सम्भालती रहेगी? इस तंरियों तो वह अपना दफ्तर न खोल कर बैठ जाये?
हल्दी की गांठ, तू म्हारे दिल का दर्द नहीं समझेगा।
कैसे, कैसे, कैश्शे समझायें हम अपने बावले दिल को? दिन रात करे हाय-हाय और खून के आंसू रोये। म्हारे किसान नेता चरणसिंह जी चौधरी साहब के साथ जो अन्याय हुआ है उसे कैसे भुलायें? जब हम १९७७ इलेक्शन के दिन याद करते हैं तो कलेजा मुँह को आता है। हमने दिन-रात एक करके रख दिया था जनता पार्टी के चुनाव प्रचार में।
गाम-गाम हम भूक्खे, प्यासे घूमे थे। रात को घास पर लम्बे पड़ के सो जाते थे। चौधरी साहब, यह सब थारे लिये ही किया था हमने। हम सोचे थे अपना किसान नेता भारत का परधान मंत्री बनेगा। म्हारे साथ चार सौ बीसी करी गयी है। चौधरी साहब आज गृहमंत्री भी नहीं रहे। पत्थर से दिल लगाया और दिल पर चोट खाई।
ओ चूहे तू ही बता, इब तू ही बता हमने इन सहर वालों की जासूस बन कर कितनी सेवा करी है! हां, कितनी सेवा करी है!! कई आसामियां म्हारे पैशे मार गईं। म्हारी फायलें देख लो, अब भी आठ हजार नो सौ उनित्तर रुपये बीस पैसे बकाया हैं इन लोगों पर।
A1 DETECTIVE SERVICE
और उस सेवा का हमको यह फल मिल रिया है। म्हारे नेता चौधरी चरण सिंह जी को कैबिनेट से दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर फेंका गया।
हमने मुहब्बत करके भी देखा, मुहब्बत में भी धोखा है। यहां वफा का सिला बेवफाई के सिवा क्या है?


ओऽऽऽऽऽऽ
जिन्दगी के देने वाले जिन्द के लेने वाले, मिनिस्ट्री म्हारे नेता की छीन के ा तुझे क्या मिला ?
हाऽऽऽऽऽऽऽ
तुझे क्या मिला ? तूने तोडी वीणा मेरी देके सहारा छीना, किसानों की आस तोड़ के तुझे क्या मिला ?
हाऽऽऽऽऽऽऽ
तुझे क्या मिला, हा, तुझे क्या मिला ?
जल गया…जल गया जल गया ऊ हू हू हू हू। जल गया जल गया तन वदन राजनीति की आग में ऊ हू हू हू हू।
इस दुनिया मां है कहीं इन्साफ ! थम अपने चारों तरफ नजर दोड़ा के देख लो। सब जंगे अन्याय नजर आयेगा। म्हारे नेता के साथ जो कुछ हुआ वह सब कांग्रेसियों की साजिश है।
ठहरो, भाई मेरे ? इस तरियों छात्ती पीटने से कुछ नहीं हुआ। अभी-अभी मेरे दिमाग में एक आइडिया घुसा है घर से भागा हुआ गधा रात को आप अपने भाडे में आ घुसता है।
प्यारे माइयों जरा यह सोचो कि भारत की आबादी का किसान है। जिस वर्ग की इतनी मैजोरिटी है वह कोई कलपे और छाती पीटे ! हम एक होकर उठ जायें तो शहर की चटनी बना सकते हैं। आज तक किसान एक होकर नहीं उठा था। जब किसान उठेगा तो धरती डोल जायेगी ! शहर वालों की रूहें कांप जायेंगी। अब हमें एक मिनट भी शहर में रुकना मंजूर नहीं है। हम गाम जायेंगे। किसानों में जागरण की हवा चलायेंगे।
हम मशाल लेकर गांव-गांव घूमेंगे। किसानों की फौज लेकर आयेंगे और दिल्ली को तबाह करके ही दम लेंगे। सरफरोशी की तमन्ना इब म्हारे दिल मां है।
देखना है कितना जोर थमारे बाजू में है।
की फौज में बिगुल
में वजाऊंगा।





सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक मे पढ़िये।



'दीवाना' का अंक नं० २५ मिला, पढ़कर दिल प्रसन्नता से झूम उठा ! कारण ? 'दीवाना कैरियर गाइड' के सुझाव, डा० झटका का नया प्रयोग, सिलबिल-पिलपिल, में मकान (उपर्युक्त शीर्षक 'मालिक मकान होना चाहिए) बहुत पसन्द आए । शायद ही भारत में दूसरी ऐसी व्यंग की कोई पत्रिका हो । ऐसी व्यंग-पत्रिका के सुधार के लिए मेरा सुझाव है कि 'धारावाहिक उपन्यास' भी व्यंगात्मक होने चाहिएं न कि सामाजिक या अन्य किसी प्रकार के । यदि 'मनोरंजन-स्ट्रीट' दुबारा आरम्भ कर दें तो सोने पर सुहागा होगा । **जितेन्द्र पठानियाँ—नई दिल्ली**

दीवाना का अंक २५ मिला, मुखपृष्ठ देखते ही जेब से पैसे निकाल लिये, दीवाना खरीदा और घर की ओर चल पड़ा । 'चिल्ली लीला' बहुत पसन्द आई । फिल्म 'कसमें आधे' की कहानी पढ़कर मजा आ गया । 'सिलबिल-पिलपिल, 'डाक्टर झटका का नया प्रयोग' और 'काका के कारतूस' बहुत ही रोचक थे । धारावाहिक उपन्यास 'दूसरी आत्मा' का दूसरा भाग व 'बच्चा झमूरा' अच्छे लगे । **हरीश गेरा—रिवाड़ी**

दीवाना का अंक २५ मिला । मुखपृष्ठ देखकर तो मजा ही आ गया । इस बार मध्य के रंगीन पृष्ठों में मि० घसीटाराम का रोल बहुत पसन्द आया । कसमें आधे बनाम कसमें वायदे का तो कहना ही क्या ? वह तो अपने आप में एक व्यंग्य थी । मदहोश ने तो मदहोश ही कर दिया । 'दीवाना' को शुभ कामनायें । **मनोहर पंजाबी—अजमेर**

दीवाना का अंक २४ मिला । मुखपृष्ठ देखते ही अलग खड़ा हो गया ताकि कीचड़ मुझ पर न आ सके । 'गरीबी हटाओ' फिल्मी स्टाइल में पढ़ा । किन्तु इसमें गरीबी दूर करने का एक उपाय नहीं था और वह था 'दीवाना पढ़ो' । सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू और बच्चा झमूरा काफी अच्छे थे । सवाल यह है ? बहुत-बहुत तारीफ के काबिल था । कुल मिलाकर इस बार 'दीवाना' अन्य अंकों की अपेक्षा बहुत अच्छा था ।

पवन खत्री 'बैरागी'—इन्दौर

दीवाना अंक २५ मिला, चिल्ली महाशय को चाहिए कि वे अब मोहम्मद अली को ललकार कर उन्हें हरा कर विश्व बोक्सर की उपाधि प्राप्त करें । मोरार जी देसाई को लिखा प्रेम पत्र दीवाना में सबसे अच्छा लगा और अपने दूसरे कलाकार मि० सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, बच्चा झमूरा फैण्टम, पंचतंत्र और सबसे रोचक क्यों और और कैसे बेहद पसन्द आए । मुझे खुशी है कि दीवाना अब काफी कोशिश करके सही वक्त पर आने लगा है, अगर दीवाना में चित्र कहानी प्रतियोगिता भी रख दी जाए, तो दूध में मलाई वाला स्वाद हो जाए ।

कमलकांत जैन—माडल टाऊन, नई दिल्ली

दीवाना का नया नवेला अंक नं० २४ पढ़ा । इसने तो हंसा-हंसाकर पेट में दर्द कर दिया । क्या मुखपृष्ठ था, क्या चिल्ली लीला क्या पिलपिल सिलबिल और क्या मोटू-पतलू सभी ने खूब हँसाया । कुछ भी कहो पत्रिकाओं का राजा है तो वह है 'दीवाना' ।

भरत मटाई नारंग बाबू सिन्धी—इन्दौर

दीवाना अंक नं० २५ का मुखपृष्ठ देखा तो कुछ समझ में नहीं आया कि चिल्ली जीत कैसे गया और झटका ने नाक क्यों पकड़ रखी है ? जब मैंने मुखपृष्ठ पल्टा और पढ़ा तो हंसी का एक फव्वारा छुट पड़ा । चिल्ली-लीला, मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल ने जो हंसाया तो···मैं कहता हूं कि इतनी हास्य सामग्री शायद ही कोई दे सकेगा । आपने मोटू-पतलू का कारनामा जो अंक नं० २५ में दिया है बहुत ही अच्छा है । अगले अंकों में भी इसी प्रकार की हास्य सामग्री दें । **यूसूफ ए-खत्रि—गुजरात**

जान से प्यारा दीवाना का अंक २४ पढ़ा । मैंने कितनी ही बार कोशिश की कि दीवाना में से कुछ कमियाँ निकालूं मगर हर बार असफलता का मुंह देखने को मिला । 'काका के कारतूस' मेरे नहीं छपते बस यही बात अखरती है । अंक २४ का 'प्रेम पत्र' भी जोरदार नहीं कहा जा सकता । चिल्ली लीला, काका के कारतूस, आपस की बातें, क्यों और कैसे, मदहोश होश में आओ, परोपकारी, व रोचक स्तम्भ 'आपके पत्र' दस-दस बार न पढ लूं तो दिल को चैन नहीं मिलता । पंचतत्र व सवाल यह है , कालम छोटे होते हुए भी काफी ज्ञान वर्धक, रोचक व मनोरंजक हैं । इन दोनों स्तम्भों को दीवाना की जान कहूं तो कोई गलत बात नहीं है । आप वर्ग पहेली के सभी विजेताओं के नाम प्रकाशित करें तो प्रतियोगिता में भाग लेने में मजा आ जाएगा । इनाम भले ही लाटरी द्वारा दिया जाए । 'बन्द करो बकवास, की जगह अगर माकड़ जासूस प्रकाशित करें तो कैसा रहे ? **रोशन व्यास त्यागी—इन्दौर**

स्थान की कमी के कारण सभी सही हल भेजने वालों के नाम छापने असम्भव हैं । —सं

दीवाना के अंक २५ के मुखपृष्ठ पर चिल्ली को विजेता देख कर सहसा ख्याल आया कि चिल्ली को राष्ट्रमण्डल खेलों के लिए क्यों नहीं चुना गया । अगर चिल्ली को चुन लिया जाता तो कुश्ती में भारत को अवश्य ही स्वर्ण पदक प्राप्त होता । सिलबिल-पिलपिल तथा डा० झटका का नया प्रयोग बेहद पसन्द आया । शेष रचनाएं भी अच्छी रहीं । **गुरमीत सिंह बीती—करनाल**

'दीवाना' अंक २८ मिला, पढ़कर परम आनन्द के सागर में गोते लगाने लगा । दीवाना आज सर्वश्रेष्ठ मैगजीनों में गिनी जाती है । 'संगीता' का धारावाहिक उपन्यास 'दूसरी आत्मा' का प्रथम अंश पढ़कर इतना आनन्द आया कि दूसरे 'दीवाना' के इन्तजार में बचैन हो गया हूं । लेखिका को मेरी ओर से हार्दिक बधाई । कृपया 'पाठकों के चुटकले भी प्रकाशित करें तो मैं आपका दिलोजान से शुक्रगुजार होऊंगा ।

योगेश कुमार अग्रवाल—(नागालैण्ड)

---

२७ जुलाई का दीवाना मिला, पढ़कर मजा आ गया । फिल्म पैरोडी 'कस्में आधे' बहुत हास्यप्रद रही । साथ ही दीवाना कैरियर गाइड, मदहोश, पंचतन्त्र, चिल्ली लीला-२३० काका के कारतूस, पिलपिल-सिलबिल, व आपस की बातें, सभी फीचरों को पढ़कर पूरा टैक्स वसूल हो गया । धारावाहिक उपन्यास 'दूसरी आत्मा' शुरू करने के लिए धन्यवाद ! **रमेश चन्द्र देवानन्द—जनोली**


मोटू
पतलू
अब तक की कहानी, तस्वीरों की जवानी
गेंदामल हीरामल जौहरी की दुकान पर दिन दहाड़े डाका।
पहरेदार घायल, गोली लगने से हीरामल जौहरी की हत्या।
डाकू लाखों के जेवरात और नौलखा हार लेकर फरार
डाकुओं का लीडर अरुण घटना स्थल पर ही पकड़ा गया।
वहां मिलने वाली पिस्तौल पर अरुण की उंगलियों के निशान।
अरुण को बचाने और असल केस की छानबीन के लिए अरुण की मित्र एक करोड़पति लड़की सुधा ने डिटैक्टिव चेलाराम ७०७ से सहायता ली, चेलाराम की सहायता के लिए उसका साथी अक्लमन्द उल्लू भी सुधा की कोठी पर पहुंच गया।
सुधा के पिता की मौत के बाद उनकी करोड़ों रुपये की जायदाद और मिलों की देखभाल सुधा के अंकल करते हैं, सुधा ने चेलाराम से अंकल का परिचय कराया। वहीं मुलाकात हुई विमल प्रकाश से, उसके पिता भी बहुत-सा धन छोड़ गये हैं। सुधा के पिता उसका विवाह विमल प्रकाश से करना चाहते थे
पर सुधा ने अब तक इस सम्बन्ध पर विचार नहीं किया है। अरुण हाकी का अच्छा खिलाड़ी है। स्पोर्ट्स प्रेमी होने के नाते सुधा अरुण की मित्र बन गई है और हत्या और डकैती के आरोप में अरुण हवालात में बन्द है।
माना कि वह हाकी का अच्छा खिलाड़ी है, पर तुम्हारा उससे कोई खास सम्बन्ध नहीं और हर सबूत उसके खिलाफ है, फिर तुम क्यों इतनी रुचि दिखा रही हो?
यही तो मैं कह रहा हूं। पिस्तौल पर उसकी उंगलियों के निशान, घटनास्थल पर उसका रैड-हैंडिड पकड़े जाना उसे अपराधी साबित करता है। हाकी की टीम की आड़ में उसने बदनाम मुजरिमों का एक गिरोह बना लिया था।
देखो इस फोटो में उसके साथी, एक से एक छटे हुए बदमाश नजर आ रहे हैं, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं सुधा! अपनी ओर से मैंने पूरी छानबीन की है। मेरी मानो तो अरुण को उसके हाल पर छोड़कर उसे भूल जाओ।


यही मैं कह रहा हूं।
और यही मैं सोच रहा हूं।
तुम से बड़ा उल्लू मैंने आज तक नहीं देखा।
क्यों क्या बात है?
अरुण की फोटो इसमें ऊपर से फिट की गई है। यह फोटो नकली है।
यही मैं कह रही हूं। अरुण के सब खिलाड़ी साथियों को मैं जानती हूं। यह उसके साथी नहीं हैं।
सुधा के अंकल जी ने यह फोटो दी हैं। उनकी गर्दन नापो।
आप जानते हैं, यह फोटो नकली है?
हो सकता है आप ठीक कह रहे हों।
मुझे तो यह ड्राइंग रूम में मेज पर पड़ी मिली थी।
वहाँ कहाँ से आई?
मुझे क्या मालूम।
इसका मतलब है मेज तस्वीर उगलती है। वैसे यह तो आपको मालूम है कि सुधा करोड़ों की सम्पत्ति की अकेली मालिक है....?
और कोई दूसरा भी हिस्सेदार बनने का उम्मीदवार हो सारी सम्पत्ति हड़पने में बाधा पड़ सकती है।
कौन दूसरा उम्मीदवार? क्या मतलब है तुम्हारा? कौन हड़पना चाहता है सारी सम्पत्ति?
आप और वह दूसरा उम्मीदवार है अरुण।
आप जानते थे कि सुधा और अरुण की मित्रता किसी दिन उन दोनों के विवाह में बदल सकती है और अगर ऐसा हो गया तो करोड़ों की जायदाद हथियाने के लिए सुधा को रास्ते से हटाना मुश्किल हो जाएगा।
क्या बक रहे हो? तुम्हारा मतलब है यह अपराध मैंने किया है?
यह अपराध क्या है। करोड़ों की सम्पत्ति के लिए तो सैकड़ों हत्यायें की जा सकती हैं।
डिटैक्टिव की बात ठीक नजर आ रही है। जरूर इसमें अंकल की ही कोई चाल है।
मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।



जब तक मैं इस केस की तह तक न पहुंच जाऊं आप इस कोठी से बाहर नहीं जा सकते अकल
मुझे तो तुम कोठी से बाहर जाने से क्या रोकोगे । मैं यह देखता हूं कि तुम इस कोठी के अन्दर कैसे रहते हो ।
कोठी के लान में छुपे हुए कुछ लोग, यह बातचीत सुन रहे थे
चेलाराम ने इस सिलसिले में पुलिस चीफ से बात करनी चाही तो पता लगा कि टेलिफोन की लाइन डैड है ।
लगता है किसी ने फोन के तार काट दिये हैं ।
अकल तो यहां नहीं है ।
अकल कहां है ? उन पर नज़र रखो ।
अभी तो यहीं थे ।
लगता है निकल कर भाग गये. हमें उन पर कड़ी नजर रखनी चाहिए थी ।
तभी एक नौकर ने सुधा को एक चिट्ठी दी ।
एक लड़का यह चिट्ठी दे गया है । चिट्ठी देकर वह बाहर खड़ी गाड़ी में बैठकर भाग गया ।
चिट्ठी में लिखा था....
असल मुजरिम निकल कर भाग गया. अब मुझे खुली धमकी ।
अकल के बारे में तुम्हारा अनुमान ठीक निकला ।
आगे का क्लू कैसे मिलेगा ?
कैसे डिटैक्टिव हो तुम । कोई बेवकूफ से बेवकूफ उल्लू भी इस समय आसानी से क्लू ढूंढ सकता है ।


इस तस्वीर में देखो यह दिल्ली गेट के आस पास कहीं ली गई है। इसका मतलब है अपराधियों का गिरोह दिल्ली गेट और दरियागंज के आस-पास ही कहीं अपना अड्डा बनाये हुए है।
चलो, वहीं चलो।
मेरा विचार है जामामस्जिद पहुंचने से पहले पुलिस स्टेशन में इस केस की आगे की सूचना दे दो।
पुलिस को सूचना मैं दे दूंगा।
तुम अपना समय नष्ट मत करो।
विमल प्रकाश को पुलिस स्टेशन उतार कर उनकी गाड़ी आगे चल दी
और तेज़ चलो!
दिल्ली गेट के इलाके में पहुंच कर उन्होंने अपनी गाड़ी एक जगह पार्क कर दी।
हमें सावधानी से चारों ओर नजर रखनी होगी.
वहां एक पुलिस इन्स्पेक्टर उपस्थित था।
किसी ऐसी जगह का पता है, जहां कुछ हाकी के खिलाड़ी रहते हों?
यहां मैंने कुछ लोगों को हाकी लेकर घूमते तो देखा है।
कहां देखा है?
उधर उस गली के मोड़ पर एक मकान के सामने जहां पहलवानों का अखाड़ा है।
गली में वह आगे बढ़े। उनकी नजरें हर तरफ देख रही थीं पर कुछ बच्चे उन्हें देख रहे हैं यह उन्हें पता नहीं था।



एक बच्चे से चेलाराम ने पूछा, यहां कहीं कोई हाकी की टीम है?
जी है, उधर सामने वाले ग्राउंड में।
वे उधर जा रहे हैं, टीम की तलाश में।
हमें ठीक ही सूचना मिली थी। अभी इन्हें हाकी का मजा चखाता हूं गली की दूसरी ओर से जाकर।
आओ....
जरा पास आओ।
मेरा विचार है, तुम हाकी में बहुत इन्ट्रस्टिड हो?
तो लो देखो जरा हाकी का असली कमाल।
एक ओर हट कर चेलाराम ने हाकी का पहला वार बचा लिया।
वह आदमी चेलाराम पर लगातार वार करता रहा, सुधा की आँखें फटी की फटी रह गई थीं। उसे पता था चेलाराम हाकी के इन भरपूर हमलों से अधिक देर नहीं बच सकेगा।
ऐसे कब तक बचोगे मेरे हाकी के खेल से?
एक खतरनाक हमले में अब फिर चेलाराम ने अपने को बचा लिया। पर हमला करने वाला अब खुद ही अपनी झोंक में अपना सन्तुलन खो बैठा था।



इस रहस्यमयी कहानी का श्रगला भाग श्रागामी अंक में देखना श्रौर पढ़ना न भूलिये ।


बच्चा झमूरा और
मन जीतने का आर्ट
लड़कियों का मन जीतना कोई बच्चा झमूरा से सीखे। हर बार चक्कर में आ जाता है, फिर भी होस्टल की लड़कियां इसकी ओर आकर्षित रहती हैं।
दीवाना के फीचरों में मेरे जैसा कमाल भी करके दिखाता है कोई ? और पता है, मैं अपनी फ्रेंडज का कितना ख्याल रखता हूं ? लड़कियों का मन जीतना एक बहुत बड़ा आर्ट है।
हमें भी सिखा दो वह आर्ट।
इस आर्ट को सीखने के लिये सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि आजकल लड़कियां सबसे अधिक क्या पसन्द करती हैं ? इसके उत्तर हैं, इतर, खुशबू। जिसे अंग्रेजी में कहते हैं, 'सैंट, परफ्यूम'।
जानते हो इतर की भीनी-भीनी सुगन्ध में क्या जादू है ? आसमान से परियां उतर आती हैं इसकी महक पर। लड़कियों को उपहार में परफ्यूम की शीशी दो तो समझो उम्र भर के लिये तुम्हारी मित्र बन गई।
देखो, मेरी इस कैमिस्ट्री की किताब में इतर बनाने के कितने ही नुस्खे लिखे हैं। इन्हें पढ़कर पिछले सप्ताह से मैं एक ऐसी परफ्यूम बना रहा हूं जिसे सूंघ कर मेरी गर्ल फ्रेंडज स्वर्ग की लहरों में झूलने लगेंगी।
दवाओं से सैंट बनाने के नुस्खे
तारपीन का तेल
लो बन गई परफ्यूम, जरा सूंघकर देखो, इसकी सुगंध में कैसा जादू है।
अदरक का तेल
क्यों, मान गये ना मेरा कमाल ? इतनी बढ़िया परफ्यूम हो तो लड़कियों की फ्रेंडशिप हासिल करना कौन-सी बड़ी बात है ?


तभी वहाँ होस्टल की लड़कियां आ गई ।
क्या बना रहे हो माई डीयर अमूरे?
परफ्यूम बनाई है तुम्हारे लिये । क्या सुगन्ध है इसकी ! जरा सूंघ कर देखो ।
है ना ! जैसे फूलों भरी बहारों के आने मन में हिलोरें पैदा करते हैं !
मैं अब सोच रहा हूं कि सुगन्धित बहारों के इस खजाने को किस चीज में भरूं ?
मैं बताती हूं ! तुम्हारे घर में ही है वह चीज ।
इस में भर लो !
इस में भर लूं ?
क्या मतलब है तुम्हारा??
FLIT
देखना भई छुट्टन-मिट्ठन, क्या मतलब है इन गर्ल फ्रैंड्ज का ? परफ्यूम की सुगंध से क्या तुम अब तक स्वर्ग की लहरों में भूल रहे हो ? लड़कियों का मन जीतने का आर्ट सीखना है, तो मुँह से तो कुछ बोलो !
FLIT

टैनिस की बातें

टैनिस के वर्तमान खिलाड़ी खेल के लिये मेहनत करते है तथा कितने सम्भव अनुशासन से रहते है हम ज़रा उसकी एक झलकी अपने पाठकों को दे रहे हैं। नीचे हम आस्ट्रेलिया के डेविस कप खिलाड़ियों के दैनिक प्रोग्राम का टेबल प्रस्तुत कर रहे हैं—आपको स्वयं आभास हो जायेगा।

ट्रेनिंग का दैनिक कार्यक्रम

सवेरे जागना व नाश्ता	८ बजे
प्रैक्टिस	१० बजेसे १२-१५
हल्की मालिश	१२-१५
लंच तथा विश्राम	१२-३० से २-३०
प्रैक्टिस	२-३० से ५ बजेतक
व्यायाम	५ से ५-३० तक
जोरदार मालिश	५-३०
डिनर	८ बजे
सोना	११ बजे

(इस कार्यक्रम का सख्ती से पालन होता है)

१ बजे वाले मैच वाला दिन

जागना	८-३७ बजे
भारी नाश्ता	६ बजे
हल्की प्रैक्टिस	११-३०
गर्म चाय	१२-३०
मैच	१ बजे

३ बजे वाले मैच वाला दिन

जागना	६ बजे
भारी नाश्ता	६-३०
हल्का लंच	१२ बजे
हल्की प्रैक्टिस	१ बजे

राज गोपाल—नारनौल

प्र० : भारत के किस बल्लेबाज ने सब से पहले शतक बनाया ?

उ० : लाला अमरनाथ ने।

प्र० : लान टेनिस का सर्वश्रेष्ठ भारतीय खिलाड़ी का नाम बताइये ?

उ० : विजय अमृतराज।

महेश व्यास—जोधपुर

प्र० : भारतीय हॉकी टीम के भूतपूर्व कप्तान श्री ध्यानचन्दजी अभी तक जिवित है या उनका स्वर्गवास हो गया है ?

उ० : ध्यान चन्द जी अभी जीवित हैं लेकिन ध्यानचन्द जी के छोटे भाई रूप सिह जो स्वयं हॉकी के विख्यात खिलाड़ी थे, का स्वर्गवास कुछ मास पूर्व ही हुआ था।

खेल खेल में

अरुण पासवान—भोस्ती पाड़ा

प्र० : भारत ने ओलंपिक में हॉकी के लिए सबसे पहले किस सन् में स्वर्ण पदक प्राप्त किया ?

उ० : १६२८ एम्सटरडम ओलम्पिक में।

हरीश गेरा, फुरकान अहमद—आगरा

प्र० : कृपया वेस्टइण्डीज क्रिकेट टीम के भूतपूर्व कप्तान गैरी सोबर्स का पूर्णतया टैस्ट रिकार्ड बतायें ?

उ० : गैरी सोबर्स, ६३ टेस्ट, १६० पारियां, २१ नॉट आऊट, ८०३२ रन, ३६५ नॉट आऊट सर्वोच्च स्कोर, २६ शतक, २३५ विकेट तथा ११० कैच, अजू महेन्द से सगाई जो बाद में टूट गयी और सर का खिताब।

अश्वनी चुघ—मुक्तसर

प्र० : विश्वानाथ अब तक कितने टैस्ट खेल चुका है।

उ० : ४३

कमल—नई दिल्ली

प्र० : क्या दिल्ली में कोई सेल्फ डिफैन्स (जूडो, करॉटे, जुजुत्स, लाठी चलाना इत्यादि) सिखाने का केन्द्र है ? है तो कहाँ (पूरा पता), क्या ये निशुल्क है ?

उ० : आप इस बारे में निम्न पते पर सम्पर्क कर जानकारी हासिल कर सकते हैं—
परमजीत सिंह
सी-३६, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली।

फूलचन्द 'श्याम'—कुनकुरी

प्र० : इस समय विश्व में मान्यता प्राप्त क्रिकेट टीमें कितनी हैं ? कौन-कौन सी और उनमें सर्वश्रेष्ठ टीम कौन सी है ?

उ० : इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, भारत, पाकिस्तान तथा न्यूजीलेंड इसके अलावा दक्षिणी अफ्रीका भी मान्यता प्राप्त है लेकिन वहाँ की सरकार की रंगभेद नीति के विरोध में सब दूसरे देश दक्षिण अफ्रीका का बहिष्कार करते हैं।

सुभाष कुमार—लुधियाना

प्र० : अभी तक बेदी ने टैस्ट विकेट ज्यादा लिये हैं या अंडरवुड ने ज्यादा लिये है ?

उ० : अंडरवुड ने ! बेदी ने अब तक २४६ विकेटें ली हैं जबकि अंडरवुड ने २५५। लेकिन बेदी शीघ्र ही आगे निकल जायेंगे क्योंकि अंडरवुड के पैकर शृंखला में जाने के कारण उनका भविष्य में टैस्टों में खेलना संदिग्ध है।

महेश कुमार आर्य—रघुबीर नगर

प्र० : फुटबाल का सबसे बड़ा खिलाड़ी कौन है ? उसने सबसे ज्यादा कितने गोल किए ?

उ० : हाल में ही विश्व फुटबाल कप जो अर्जन्टीना में आयोजित हुआ उसमें अर्जेन्टीना के ही मारियो कैम्पेस इस समय के फुटबाल के विश्व के अग्रणी खिलाड़ी के रूप में उभरे हैं। पूरे चैम्पियन शिप मुकाबिलों में २२ वर्षीय इस खिलाड़ी ने ६ गोल किये। हॉलेंड के साथ हुए फाइनल मैच में कैम्पेस ने दो गोल दागे थे।

राजु गिरी—दुलियाजान

प्र० : अभिनेता जानकी दास क्या 'विश्व साइकिल चैम्पियन' रह चुके हैं ?

उ० : नहीं ! इतना जरूर है कि जानकी दास जी ने विश्व की कई चैम्पियन शिप रेसों में भाग लिया था।

अभय लांबोर—शांति नगर

प्र० : क्रिकेट में सबसे अधिक रन किसने बनाये हैं ? इनमें भारत के सुनील गावस्कर व गुंडप्पा विश्वनाथ के कौन-कौन से स्थान हैं ?

उ० : सबसे अधिक रन गैरी सोबर्स ने बनाये हैं ८०३२ रन। गावस्कर और विश्वनाथ अभी बहुत पीछे हैं दोनों ने हाल के आस्ट्रेलिया सीरीज में ३००० रनों की संख्या ही पार की है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एक लाला जी को किसी ऐसे नौकर की जरूरत थी जो कंजूस हो। एक दिन एक नौकर उनके पास नौकरी को आया।

लाला जी ने कहा—'हमें नौकर की तो सख्त जरूरत है, लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो।'

नौकर ने कहा—'इसी कंजूसी के कारण मैं एक जगह से निकाल दिया गया हूं।'

लालाजी ने पूछा—'वह कैसे ?'

नौकर ने जवाब दिया—'हुजूर, मैं अपने कपड़े फटने और गन्दे होने के डर से कभी नहीं पहनता था, मालिक के ही कपड़े उठाकर पहन लिया करता था।'

●

एक लाला जी बड़े लोभी आदमी थे। उनके एक नौकर था। उसके कपड़े बहुत फट गए थे। नौकर ने जब देखा कि लालाजी अपनी तरफ से कुछ कहते ही नहीं तो उसने एक दिन खुद ही लाला जी से कहा—'सरकार, कपड़े बहुत फटे पुराने हो गए हैं, हमें अब नई वर्दी मिलनी चाहिए।'

लाला ने मुँह बनाते हुए कहा—'वर्दी जितनी ज्यादा फटी पुरानी हो, उतनी ही नौकर की कद्र होती है। जो लोग देखेंगे वे कहेंगे, यह लाला जी का पुराना नौकर है।'

नौकर चुप हो गया। एक लालाजी के दरवाजे पर एक फकीर भीख माँगने आया। वह बड़ी खराब हालत में था। उसके फटे पुराने कपड़ों को देखकर एकदम घिन लगती थी। लालाजी उस समय अपने चार दोस्तों के साथ कमरे में बैठे हंसी मजाक कर रहे थे। लालाजी का नौकर लालाजी के पास गया और कहने लगा—'सरकार, आपका एक बहुत पुराना नौकर आया है।'

लालाजी ने कहा—कौन है, उसको यहीं लिवा लाओ।'

नौकर ने उस फकीर को ले जाकर लालाजी के सामने खड़ा कर दिया। उसे देखकर लालाजी ने कहा—'यह कौन है ? क्या तू मुझसे मजाक करता है ?'

नौकर ने कहा—'इसके कपड़े बहुत फटे पुराने थे। मैंने समझा कि शायद यह आपका सबसे पुराना नौकर हो।'

●

लालाजी ने अपने नौकर से बिगड़ते हुए कहा—'तू दिन पर दिन सुस्त होता जा



रहा है। जिस काम के लिए भी भेजा जाता है उसी में दिन गुजार देता है। आदमी वह है जो तेजी के साथ अपना काम करे। एक काम को भेजा जाए तो दो काम करके लौटे।'

लालाजी सख्त बीमार हो गये। एक दिन हकीम को बुलाने के लिए लालाजी ने



अपने नौकर को भेजा। वह हकीम को बुलाने के साथ साथ लालाजी की बिरादरी के कितने ही आदमियों को भी बुला लाया।

●

एक पंडित जी ने एक गंवार नौकर रखा। वे उसे उसका खाना बनाने के लिए आटा दाल अलग दे दिया करते थे। पंडित जी रोज बढ़िया-बढ़िया चीजें बनाकर खाया करते थे।

एक दिन पंडितजी ने खूब बढ़िया चीजें बनाई और थाली में परोसकर खाने ... उधर नौकर ने भी अपनी दाल बाटी ... की थी। नौकर ने एक बाटी लेकर पं... की परोसी हुई थाली में जाकर डा... और बोला, 'पंडितजी, आज तो हा... बाटी खाकर देखिए, कैसी लगती है।'

पंडित जी एकदम चिल्लाकर ... 'अरे पाजी, यह तूने क्या किया ? मेरी ... बनाई रसोई तूने झूठी कर दी। अब ... काम की ही नहीं रही। ले, इसे ले... और खाले।'

पंडित जी की बात सुनकर नौकर ... प्रसन्न हुआ और मजे से ले जाकर ... लगा।

दूसरे दिन फिर पंडितजी रसोई ... कर खाने बैठे। नौकर पंडितजी को थाली ... बैठते देखकर झट चौके में घुस गया ... पंडिजी के पैर पकड़कर बोला—'महा... मेरा कल का कसूर माफ कर दीजिए ... कारण आप कल भूखे रहे।'

पंडितजी के क्रोध का कुछ ठिकान... रहा। वे बोले—'अबे, नमकहराम, तूने ... आज भी वही किया, आज फिर मैं ... मरा।'

●

एक कम्पाउण्डर, जिसे एक डाक... यहाँ काम करते एक सप्ताह ही हुआ ... अपने एक मित्र के साथ घूमने जा रहा ... मार्ग में एक सार्वजनिक टेलीफोन-बूथ दे... वह उसमें घुस गया, और अपने मा... डाक्टर का नम्बर मिलाकर आवाज ... कर उससे बातें करने लगा। उसने पू... 'आपने एक कम्पाउण्डर के लिए इ... दिया था ?'

'हाँ, दिया तो था।'

'क्या मैं उस जगह के बारे में ... मिलने आऊँ ?'

'नहीं, मैंने एक आदमी रख लिया...'

'क्या आप उसके काम से सन्तुष्ट ... कोई तबदीली नहीं चाहते हैं ?'

'हाँ, मैं उससे पूरी तरह सन्तु... कोई तबदीली नहीं चाहता।'

जब वह बाहर आया तो उसके ... ने पूछा—'क्या बात है भई, क्या तु... नौकरी छूट गई है ?

'नहीं, नौकरी तो है, पर मैं ... चाहता था कि मेरा मालिक मेरे का... खुश है अथवा नहीं।'

●



फैण्टम और शादी की तैयारी
बंगाला के राष्ट्रपति लुआगा कृपया यहां पधारें।
धन्यवाद
आईवरी-लाना के राष्ट्रपति कृपया आप भी यहां पधारें।
बहुत अच्छा।
लांगों के मुखिया लियोंगो, वम्बासी के वम्बाटा, मोरी के मुधाटा तथा ओगान के ओबिजू इस तरफ पधारें।
अभी देखना मैंने किसको बुलाया है!
बाराती
धुन्ध से घिरी पहाड़ों की चोटियां, टिराना कोरान और मोलान्डा पर रहने वाले राजकुमार।
सात राष्ट्रों पर राज करने वाले लोथर के राजकुमार तथा उनके दोस्त इधर पधारें।
यह है 'हिज', गुफा का दैत्य…
हिज घबराओ मत…
हिज…
यह कौन है और इसको किसका डर है?
बाराती…
कर्नल वारवू जगल पेट्रोल, डाक्टर ऐक्मल बंगाला हस्पताल…
मैं राष्ट्रपति का रक्षक हूं, मुझे उनसे अलग क्यूं कर रहे हो?
ओह!
हिज
घबराओ नहीं यह सिर्फ कुकुरमुत्ता खाता है।
बूढ़ा आदमी मौज…कहानियां सुनाने वाला…
आदरणीय अतिथिगण कृपया शान्ति से अपनी-अपनी जगह बैठ जायें अब शादी का समारोह शुरू होने जा रहा है
दुल्हन को माता कृपया मेरे साथ इस तरफ आ जायें।
ओह…डियाना मेरा तो दिल बैठा जा रहा है
मम्मी अब रोना-धोना छोड़ो, आज मेरी जिन्दगी का सबसे खुशी का दिन है!
तुमसे बहुत हूं, मैं आज की सबसे अच्छी दोस्त तुम्हें मानती हूं।
यह मेरा सौभाग्य है…
मैं अपनी बेटी डियाना का कन्यादान करूंगा डियाना तुम तैयार हो?
मैं तैयार हूं अंकल डेव



फिल्मी वर्ग पहेली

१० रु० ईनाम

1		2		3
	■		■	
4	5	■	6	
■	7		■	
8		■	9	

बायें से दायें

१. पर्वतरोहियों का दिल हरने वाला हास्य कलाकार? (३-२)

४. कव्वों की जाति का अभिनेता? (२)

६. एक भूतपूर्व अभिनेत्री का संक्षिप्त नाम जिसमें उसके असली नाम के प्रथम को दुगना भर दिया गया है। (२)

७. राजकपूर में से उड़ने वाले को उड़ने दो और बाकी को उलट कर थोड़ा करो। (२)

८. कैसे गहरी फिल्म हो सकती है? (२)

९. श्री लागू करने से पहले भगवान का नाम लीजिये अच्छे अभिनय के लिए (२)

ऊपर से नीचे

१. आर. डी. बर्मन की डार्लिंग? (३)

२. फिल्म नया नशा के एण्ड में एक नयी बन रही उल्टी फिल्म आधे तक है। (२)

३. इस अभिनेत्री को उल्टे ऐंगल से देखने पर पिट्ठी सी लगती है शायद दुकान में काम करने वाले ऐसे पुरखों को बाद में यह बात कड़वी लगे। (२-३)

५. बगैर रोशनी की अभिनेत्री जो दर्शकों की आँखों में बस गयी है? (३)

अन्तिम तिथि २३- -७८

कुछ पहेलियां

१. मैं मौत का सामान लेकर आई आप पहले इंश्योरेंस करा लीजिये।

२. मैं कुछ खाने के लिए लाई आप पहले गर्म हो लीजिये।

३. मैं शून्य दिखाती हूं पहले आप एक रिश्तेदार से मिल लीजिये।

४. मैं मुँह से देने वाली चीज देती हूँ पहले आप चिड़िया देख लीजिये।

५. मैं तीनों को उठाती हूँ पहले आप तो क्यू में आगे लग जाइये।

उत्तर—

१. बीमारी

२. जलपान

३. आकाश

४. बयान

५. यह आपको बताना है

अन्तिम तिथि - २३-६-७८

क्यों और कैसे

प्र० : मनुष्य के हृदय का भार कितना है, हृदय की धड़कन तथा कार्य के बारे में विस्तार से बताइये ?

दीपक कुमार 'अमित', सिरसा

उ० : हृदय छाती के बीच लिगामेंट या मांस तन्तुओं से लटका नाशपाती की शक्ल का होता है। यह १० सें. मी. चौड़ा, चौड़े स्थान से तथा १५ से. मी. लम्बा होता है, इसका भार केवल ३४० ग्राम होता है। ये चार खानों का एक बहुत ही शक्तिशाली पम्प जो कि प्रतिदिन लगभग ९६००० किलो मीटर लम्बी शरीर की नाड़ियों में रक्त को पम्प करता है। इतना पम्प किया हुआ रक्त १८.००० लिटर के एक विशाल टैंक को भरने के लिये परियाप्त होता है।

हृदय को सदा बहुत नाजुक अंग समझा जाता है जबकि इसकी मांस पेशियां शरीर के सभी अंगों की मासपेशियों से दुगना कार्य करती हैं। इनकी तुलना केवल स्त्रियों की बच्चेदानी की मांस पेशियों से हो सकती है, परन्तु वे भी केवल शिशु जन्म के समय ही काम करती हैं इसके विपरीत हृदय जीवन सत्तर-अस्सी वर्षों में हर पल हर क्षण कार्यरत रहता है। हृदय एक मिनट में लगभग ७२ बार धड़कता है जो गति सोते समय घट कर ५५ बार हो जाती है, क्योंकि सोते समय शरीर को रक्त की आवश्यकता कम हो जाती है। हृदय में कहना चाहिए दो पम्प हैं, एक से ये रक्त फेफड़ों को भेजता है तथा दूसरे से शरीर में भरता है। पहले पम्प के फेफड़ों में भेजने के कार्य के समय दूसरा पम्प धीरे हो जाता है तथा ये ही उसके आराम का समय होता है। रक्त के साफ होने के बाद आने पर फिर ये रक्त को शरीर में भरता है। मनुष्य का नोरमल ब्लडप्रेसर नीचे का ६० तथा ऊपर का ९० + आयु के लगभग होता है। ऊपर का ब्लडप्रेशर हृदय के कार्य करते समय तथा नीचे का उसके आराम करते समय होता है। इस कारण नीचे की संख्या अधिक महत्व की होती है। ये संख्या जितनी ऊंची है, समझ लो हृदय को उतना ही काम अधिक तथा आराम कम मिलता है। इसलिए नीचे का प्रैसर बढ़ना हृदय के लिये अति हानिकारक है।

कभी-कभी हृदय की धड़कन गड़बड़ सी प्रतीत होती है परन्तु ये कोई बहुत अस्वभाविक बात नही है। हृदय किसी भी प्रकार की कार के ईंजन के समान ही है जो कि ठीक होते हुए भी कभी-कभी मिसफायर करता है। कई बार सोने के तुरन्त बाद भी हृदय की गति में तेजी अनुभव होती है परन्तु यह हो सकता है ये कोई बिशेष चिन्ता की बात नहीं है क्योकि यदि स्वप्न में भी हम उत्तेजित होते है अथवा भागते हैं तो भी हृदय पर पूरा प्रभाव पड़ता है, तथा हृदय भी उत्तेजना के कारण तेजी से धड़कने लगता है। ऐसे में चिंता के बजाय धैर्य से काम लें तथा शान्त हो जायें तो अवश्य ही हृदय की गति भी शान्त हो जायेगी। कभी-कभी पूर्ण कोशिश करने पर भी हृदय शान्त नहीं होता. ऐसे में कानों के पीछे से गरदन की ओर जाने वाली 'वेगस' नामक नाड़ियों को धीरे-धीरे सहलाना अति लाभदायक होता है ये हृदय गति पर ब्रेक का कार्य करती हैं। हृदय को भी अपना भोजन सारे शरीर के समान रक्त से ही प्राप्त होता है, परन्तु ये रक्त वह नहीं है जो हर समय हृदय से आता जाता है। हृदय को भोजन पानी पीने की नली जितनी मोटी दो कोरोनरी नाड़ियां हृदय के ऊपरी भाग पर स्थित होती हैं। इन कोरोनरी नाड़ियों के भिचने तथा इनमें फैटीटिशु इकट्ठा होना परेशानी का कारण है। कभी-कभी इनमें खून का जमा हुआ कतरा अटक जाता है। जो यदि निकल न पाये तो रोगी की मृत्यु का कारण बन जाता है। इससे बचने के लिये आवश्यक है कि हृदय से बहुत अधिक काम न लिया जाये। मोटापे के कारण हृदय को बहुत काम करना पड़ता है। शरीर के हर एक किलो फालतू मांस में लगभग ७००किलो मीटर लम्बी खून की नाड़ियां होती हैं जिनमें हृदय को अतिरिक्त रक्त पम्प करना पड़ता है। और हृदय का कार्य बढ़ जाता है। इसके लिये आवश्यक है कि हम अपने भोजन को संतुलित रक्खें तथा अपने शरीर के वजन को कम रक्खें। नियमित व्यायाम भी इस में सहायता करता है चिकना तथा सिगरेट का प्रयोग कम तथा आंख बन्द कर लेट कर आराम भी आवश्यक है। इससे हृदय को परियाप्त आराम मिलता रहेगा और स्वस्थ रह कर वह जीवन भर आपका बखूबी साथ देगा।



प्र० : बात करते समय आवाज कहां से पैदा होती है ?

योगेश कुमार अग्रवाल, नागालैंड

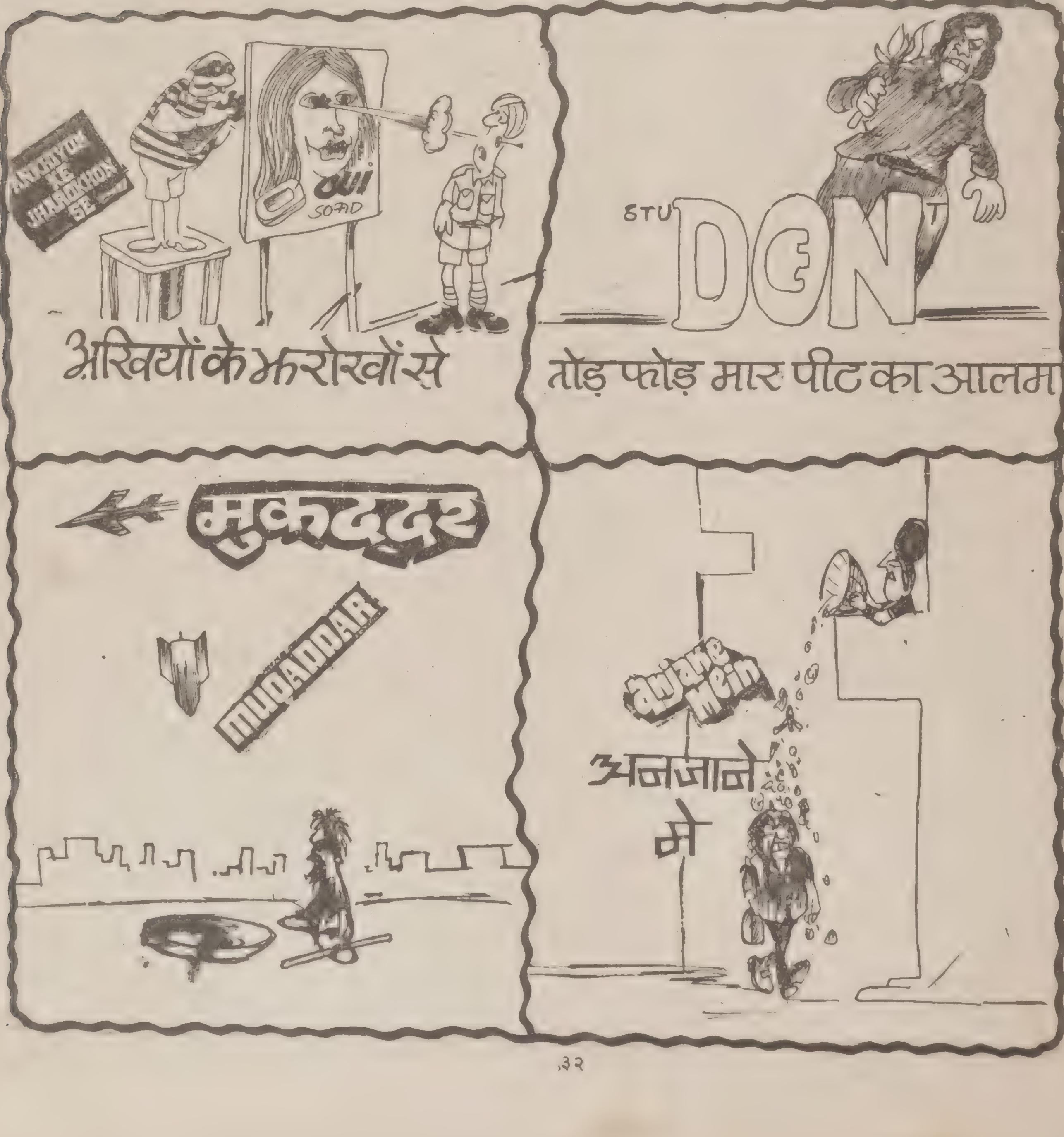
उ० : आवाज स्वरयन्त्र में पैदा होती है या इसे आवाज का डिब्बा, जो कि उपास्थि से बना होता है कह सकते हैं। इसका एक नाम 'एडम्स ऐप्पल' भी है और इसे गले के बाहर से महसूस भी किया जा सकता है। ये हमारी सांस की नली का ही एक भाग है। इस स्वरयन्त्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दो पतले तन्तु जुड़े रहते हैं। इन्हें स्वर तन्तु कहते हैं, ये स्वरयन्त्र की दोनों खुली तरफों पर होते हैं। इनकी मांसपेशियां फैलती व सिकुड़ती हैं। कंठ से ध्वनि उत्पन्न होने पर ये स्वर तन्तु स्वरयंत्र के मुंह को खींच कर छोटा कर देते हैं तथा स्वरयंत्र से आती हुई हवा स्वर तन्तुओं को हिला कर सुनाई देने वाली ध्वनि उत्पन्न करती है।

आवाज की तेजी या घनापन फेफड़ों से आती हवा के दबाव पर निर्भर होता है। स्वर तन्तु जितने अधिक खिचते हैं आवाज उतनी ही तेज होती है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में स्वर तन्तु अक्सर छोटे होते हैं। इसी कारण स्त्रियों की आवाज अधिक ऊंची उठ जाती है। व्यस्क होने तक लड़कियों तथा लड़कों के स्वरयंत्र प्रायः बराबर होते हैं तथा आवाज भी लगभग एक सी ही होती है इसके बाद लड़कों के स्वरयंत्र बड़े हो जाते हैं तथा उनकी आवाज फट जाती है। स्वर तन्तु केवल अलग-अलग स्वर की ध्वनि पैदा करते हैं भांति-भांति के शब्द मुंह को अलग-अलग तरह बनाकर तथा गले से हवा को कम या अधिक निकलने दे कर उत्पन्न किये जाते हैं।

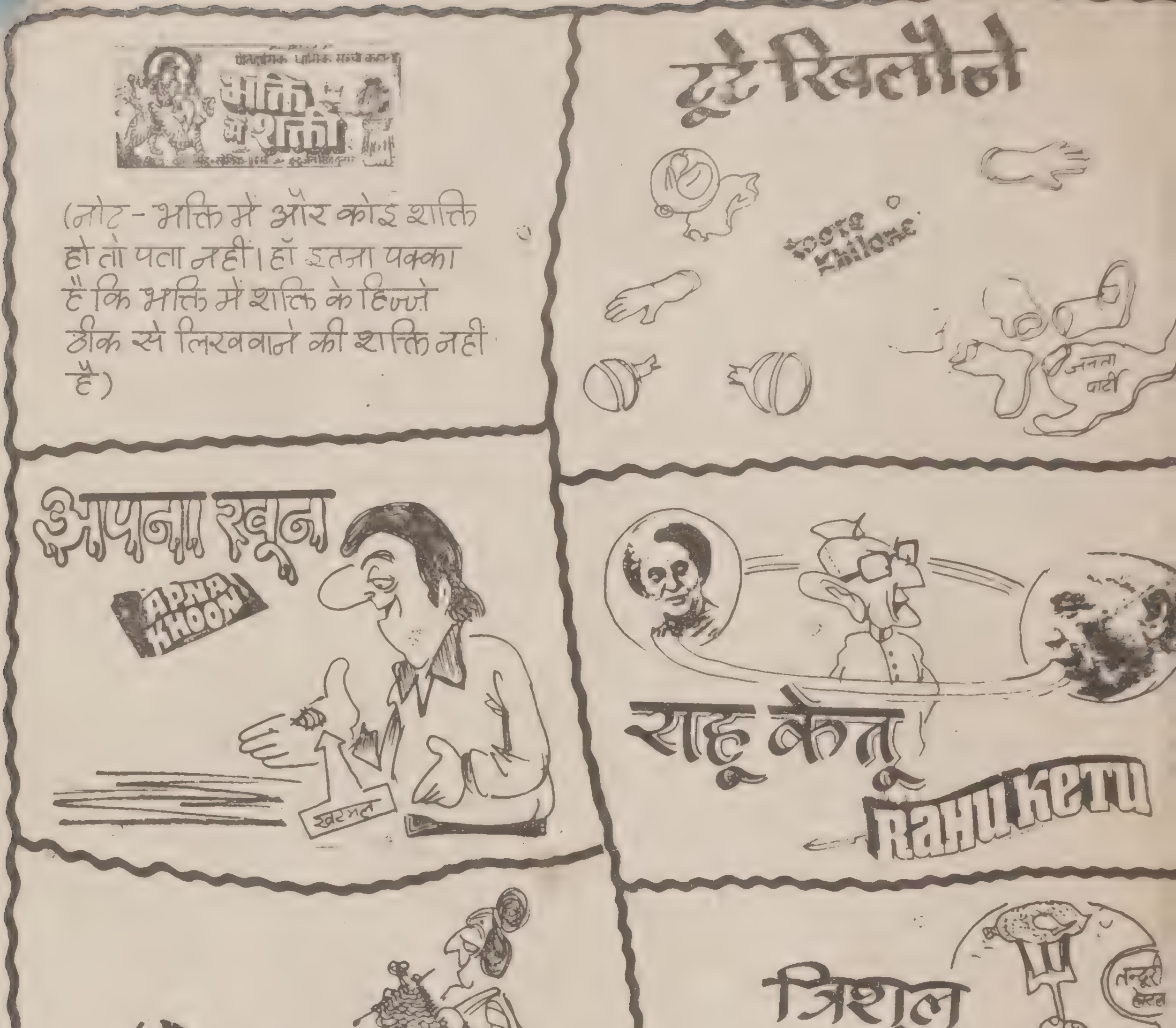
क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फिल्मी [illegible]

के नये दीवाने स्टाइल




Cola
77
Thums Up
Naya Daur
नया दौर
तांत्रिक
JADUTOONA
जादू टोना
GANGA KI SAUGAND
गंगा की सौगंध
किस्सा कुर्सी का
Rs.
Satyam Shivam Sundaram
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
AMAR SHAKTI
अमर शक्ति
सम्पूर्ण नशाबन्दी
TRISHNA
तृष्णा
नये पुराने सारे कांग्रेसी एक होने चाहिये
apnapan
अपनापन
PATI PATNI
पति पत्नी और वह

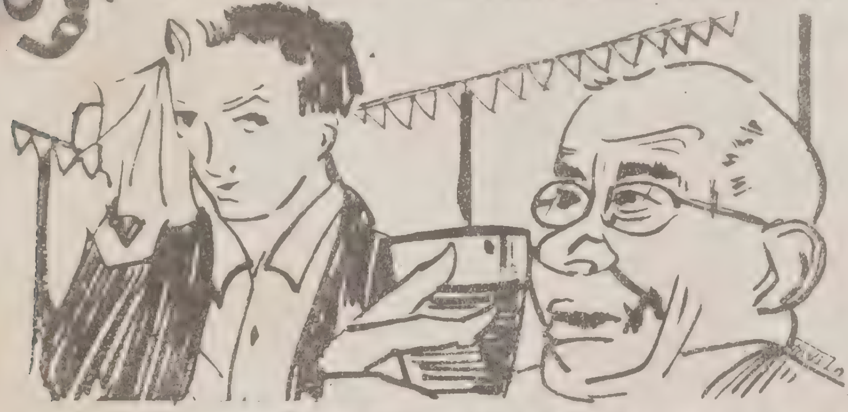


भक्ति में शक्ति
(नोट- भक्ति में और कोई शक्ति हो तो पता नहीं। हाँ इतना पक्का है कि भक्ति में शक्ति के हिज्जे ठीक से लिखवाने की शक्ति नही है)
टूटे खिलौने
Toote Khilone
जनता पार्टी
अपना खून
APNA KHOON
खटमल
राहू केतू
RAHU KETU
PHANDEBAAZ
फन्देबाज
त्रिशूल
Trishul
Sufed Jhooth
सफेद झूठ
Des Pardes
Rs
$
देस परदेस
बस यही है फर्क



अगले सप्ताह फिर देखिये छज्जू क्या समझा।

मुंह दिखाई



—अर्जुन 'अरविन्द'

रचना ने अनुभव किया कि परिवार भर के लिए वह भार बनी हुई है और परिवार इस भार को ढोता चल रहा है। इसीलिए तो घर से बाहर निकलने पर उसके लिए पाबन्दी है। हंसकर बोलने पर उसे मां की झिड़की सहन करनी पड़ती है। अपनी दयनीय दशा पर उसकी आंखों में कभी आंसू तैर आते हैं तो कभी कई-कई ताने सुनने पड़ते हैं और रचना इक्कीस वर्षों का बोझ लादे अपना शरीर ढोती चल रही है। उसका हृदय कभी झरने की तरह फूट पड़ता है। वह सोचती है—आखिर उसमें कौन-सी कमी है जिसके कारण परिवार उसे बोझ समझता है? वह सुन्दर, युवा, स्नातक युवती है। पापा चाहें तो किसी स्कूल या दफ्तर में नियुक्ति दिलवा सकते हैं। लेकिन वे तो जल्दी से जल्दी उसे घर से बाहर फेंक देना चाहते हैं। उस पर भी उसके लिए कोई उपयुक्त वर न मिले तो उसका क्या दोष?

ब्रजेश बाबू पिछले दो वर्षों से रचना का सम्बन्ध करने के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं। लेकिन हर बार उन्हें निराश होकर ही लौटना पड़ता। अच्छे से अच्छा वर वे रचना के लिए चुनना चाहते हैं।

रविवार की संध्या को जब ब्रजेश बाबू निकट के शहर से लौटे तो उनके चेहरे पर नई ताजगी थी। परिवार के अन्य लोगों ने अनुमान लगाया, इस बार वे सफल होकर ही लौटे हैं। सोफे पर बैठने के बाद ब्रजेश बाबू ने बताया कि एक अच्छे परिवार में रचना का सम्बन्ध कर आये हैं। उन्होंने अनुभव किया कि अब घर में उदासी के बादल छंटने लगे हैं।

रचना की मां में भी परिवर्तन आ गया। रचना के भविष्य पर उगली सैंकड़ों गालियों को स्नेह भरे दुलार ने धो डाला। रचना मां के इस अचानक परिवर्तन पर आश्चर्य करती। रचना को इतने भर से सन्तोष मिलता कि घुटन भरे जीवन से अब उसे मुक्ति मिलने लगी है।

रचना की मां अब उसकी तारीफों की झड़ी लगा देती। वह पड़ोस भर में कहती फिरती—लाखों में एक वर मिला है मेरी रचना को। प्रतिष्ठित परिवार है। लड़का आई० ए० एस० है। पिता राजस्थान में तहसीलदार हैं। रचना के पापा कल उसका फोटो दिखा रहे थे। रूप रंग और डील-डौल से भी ठीक उसी तरह लगता है जैसे एक बड़े आफ़िसर का होना चाहिए। मेरी रचना उस परिवार में राज करेगी। घर में कई-कई नौकर होंगे। फिर उसे किस बात की कमी रहेगी?

और रचना ने जब अपने होने वाले जीवन साथी अनिल का चित्र देखा तो देखती रह गई। इतने सुन्दर जीवन साथी की कभी कल्पना भी उसने नहीं की थी। वह जब भी अनिल की तारीफ सुनती उसका यौवन में बौराया तन मादकता से भर उठता। मन का हर छोर कल्पना के धागों से अन-देखे सपने बुनने लगता। परिवार का कोई सदस्य जब अनिल के विषय में चर्चा छेड़ने लगता तो वह उठकर अपने कमरे में चली जाती और बिस्तर पर लेट कर अनिल का फोटो देखने लगती।

विवाह का एक महीना ही शेष रह गया था। तभी से घर में तैयारियां आरम्भ हो गई। ब्रजेश बाबू ने अपनी हैसियत के अनुसार सामान खरीदना आरम्भ कर दिया। घर में नई-नई वस्तुओं का ढेर लग गया। विवाह के अवसर पर रचना को देने की आवश्यकता की सभी वस्तुएं उन्होंने खरीद लीं। एक सुन्दर सा टेबल-फैन, दो कलाई घड़ियां, सोफासैट, अनेक कीमती कपड़े, ढेर सारे बर्तन व आधुनिक साज-सज्जा की अनेक वस्तुएं एकत्रित कर लीं।

ब्रजेश बाबू विचारों से दहेज प्रथा के विरोधी थे। लेकिन फिर भी रचना की सुख-सुविधा और उसके लिए अच्छा वर पाने के लिए उन्होंने यह सब किया। रचना उनकी इकलौती पुत्री जो थी। उसे खाली हाथ घर से कैसे विदा करते? फिर समाज भी तो अगुली उठाता। पता नहीं लोग क्या-क्या कहते?

एक महीना जैसे आंख झपकते ही बीत गया। विवाह के दिन ब्रजेश बाबू का फ्लेट रंगीन बल्बों और ट्यूब लाइटों की रोशनी से जगमगा उठा। बाहरी मैदान में कनातें खड़ी हो गई। घर का वातावरण अतिथि और स्थानीय मित्रों की चहल-पहल से भर गया।

बारात चढ़ी। रचना का मन नये-नये सपनों के बीच डूबने उतरने लगा। पिता के घर से दूर चले जाने की बात सोचकर उस का हृदय बैठने लगता लेकिन अनिल के साथ नये परिवार में जाने का मोह उसमें उत्साह और ताजगी भर देता। नई साड़ी में लिपटी, साज-संवर कर बैठी रचना सभी कुछ सोचती रही।

उसी समय घर के वातावरण में अचानक उदासी छा गई। रचना कुछ समझ न सकी। उसने देखा, निकट बैठी सहेलियों के भी मुंह लटक गये हैं। रचना ने पूछने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन उसे किसी ने कुछ न बताया। वह विवश हो उठकर उस कमरे में चली गई जहां परिवार के सब लोग इकट्ठे हो रहे थे। उसने कमरे में देखा तो अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। ब्रजेश पलंग पर बेहोश पड़े थे। रचना के चाचा डॉक्टर सम्पत लाल उनका उपचार कर रहे थे।

आधे घंटे बाद ब्रजेश बाबू को होश आया। किन्तु फिर भी परिवार के सब लोग उदास बैठे थे। रचना वहां से चली और अपनी सहेली सरोज से पूछने लगी। रचना

मदहोश



के हट करने पर उसकी सहेली ने बताया कि वर और उसके पिता विवाह के अवसर पर कार की मांग कर रहे हैं। उन्होंने साफ कहलवा दिया कि दहेज में कार की व्यवस्था न की गई तो यह विवाह भी नहीं हो सकता, बारात वापस लौट जायेगी ।

आठ सौ रुपये पाने वाले साधारण से याख्याता ब्रजेश बाबू किस तरह इतनी ड़ी व्यवस्था कर सकते थे ? वर पक्ष की स शर्त को सुनकर उनका हृदय दहल या । आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उसे अंधेरे में अनेक चित्र मंडराने लगे । यदि यह विवाह न हो सका तो लोग क्या कहेंगे । पीढ़ियों की बनी बनाई इज्जत धूल में मिल जायेगी । फिर रचना के लिए कहां वर ढूंढ़ा जा सकेगा ? ब्रजेश बाबू यह सब न देख सके और मूर्छित हो धरती पर गिर पड़े ।

रचना के हृदय पर पहाड़ सा टूट पड़ा । पूरी घटना जानकर वह क्रोध में फुफकार उठी । मन ही मन सोचने लगी—'मुझे ऐसा विवाह नहीं करना, जहाँ रस्म के नाम पर मजबूरियों का सौदा हो । इस घिनौने जीवन से तो अविवाहित रहना ही ठीक है । लेकिन विवाह न हुआ तो परिवार की प्रतिष्ठा का क्या होगा ? पापा किस तरह अपने मित्रों को मुँह दिखायेंगे···? उसका मन अनेक उलझनों में फंस गया ।

रचना सोचती रही और घर में उदासी का सन्नाटा बढ़ता गया । तभी रचना कुछ निर्णय लेकर उठी । उसने अपने चाचा डाक्टर सम्पत लाल से कहा—'अंकल, आप तीन दिन के लिए अपनी कार मुझे दे दीजिए । मुझ पर विश्वास करिये, ठीक तीन दिन में यह वापस लौट आयेगी ।'

डाक्टर सम्पत लाल रचना की बात मान गये । ब्रजेश बाबू के मन का बोझ हल्का न हुआ । लेकिन विवाह की धूम फिर आरम्भ हो गई ।

रचना को सहेलियों ने सजाकर बैठाया। वर तथा उसके पिता ने विजय पर कुटिल प्रसन्नता बिखेरी । रचना का विवाह हो गया । दूसरे दिन रचना के साथ डाक्टर सम्पत लाल की नई-नवेली कार लेकर बारात विदा हो गई ।

बारात वर पक्ष के घर पहुंची । रचना ने देखा, फाटक पर अनेक प्रतिष्ठित लोग खड़े हैं । जिनमें कुछ उच्च अधिकारी हैं और कुछ बड़े नेता जान पड़ते हैं । कार की फाटक खुली, रचना की सास ने उसे प्यार किया । बलायें लीं और उसे कार से नीचे उतारना चाहा । लेकिन उससे पहले रचना ने कहा—'जब तक मुझे 'मुंह दिखाई' के पच्चीस हजार रुपये नहीं मिलेंगे, मैं नीचे नहीं उतरूंगी ।'

कार के निकट खड़े लोग स्तब्ध रह गये । रचना के ससुर गिड़गिड़ाने लगे—'बेटी रुपये कल ले लेना । इतने लोगों के सामने मेरा अपमान हो रहा है । तुम्हीं सोचो, इतने रुपयों का प्रबन्ध अभी कैसे करूं ?'

रचना ने सिर झुकाकर कहा—'जैसे मेरे पिता जी ने कार का प्रबन्ध किया था ।'

ससुर के मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगीं । अब वे लोग होश में आये थे । उन्होंने ड्राइवर को सौ रुपये का नोट देकर कहा—'कार ले जाओ, हमें नहीं चाहिए ।' ड्राइवर कार में बैठ गया । रचना नीचे उतर आयी । उसने देखा—ससुर का सिर लज्जा से झुक गया है । ●

पृष्ठ १३ से आगे

'मैं सोती रह गई थी।'

'रात मैं देर में सोई थी ना।'

'डैडी की तबीयत अब कैसी है ?'

'अब तो रात से काफी सुधरी हुई है।'

'डाक्टर अंकल आए थे देखने ?'

'जी हां—वह चार महीने तक पूरा आराम बता गए हैं।'

'ओह—' रचना ने कहा, 'अब तो अकेले हैं डैडी ?'

'जी नहीं उनके पास मुनीम जी बैठे।'

'मुनीम जी !!'

रचना के हृदय में मीठी तरंग-सी दौड़ गई···कानों में घण्टियां-सी बज उठीं···उसे याद आया कि रात मुनीम जी के लड़के से डैडी ने उसकी शादी की बात की थी—शायद मुनीम जी इसी बारे में कुछ कहने आए हों। रचना अपने कमरे से निकली और सेठ जी के कमरे की ओर बढ़ गई। द्वार पर पहुंचते ही उसके पांव ठिठककर रुक गए। अन्दर से ठाकुर साहब की खुशी-भरी आवाज आ रही थी—

'तो आपका बेटा मान गया ?'

'हां मालिक···भला वह मेरी आज्ञा की अवहेलना कर सकता है ? अरे वह पढ़ा-लिखा है तो क्या हुआ ? आज भी मैं अगर आंखें निकालकर बात कर देता हूं तो मुझसे आंखें मिलाने का साहस नहीं करता।'

'योग्य बेटे ऐसे ही होते हैं।'

'सच कहते हैं आप मालिक···सौभाग्य से ही ऐसे बेटे मिलते हैं आज के युग में।'

'ऐसे दामाद भी तो सौभाग्य से मिलते हैं।'

'यह तो आपकी कृपा-दृष्टि है मालिक जो आप राजा भोज होकर मुझ गंगू तेली को इतना बड़ा सम्मान दे रहे हैं।'

'हां—एक चिन्ता तो भगवान् ने दूर कर ही दी।'

'वह क्या मालिक ?'

'डाक्टर ने हमें चार महीने तक बिस्तर से न उठने का परामर्श दिया है—हम सोचते थे कि अगर हम घर ही में पड़े रहे तो काम की देखभाल कौन करेगा ?'

'अब तो वह सब-कुछ संभाल लेगा मालिक—मेरा बेटा बहुत बुद्धिमान् और होशियार है।'

'यह क्या है ?'

'यह मैं उसकी तस्वीर लाया हूं—आपने तो उसे बचपन से नहीं देखा ना।'

'अरे···भई वाह कितना सुन्दर जवान निकला है आपका बेटा···भगवान् बुरी नजर से बचाए।'

'अच्छा मालिक···अब मैं चलूं···आफिस जाना है।'

'हां···आप जाइए' ठाकुर साहब की आवाज आई, और यह तस्वीर यहीं छोड़ जाइए।'

रचना जल्दी-से दरवाजे के पास से हट गई और झपटकर साथ वाले कमरे में घुस गई···वह ज्वाला प्रसाद के कदमों की लौटती चापें सुनती रही और उसका दिल बहुत जोर-जोर से धड़कता रहा—फिर ज्वाला प्रसाद के कदमों की आहटें लीन हो गईं—लेकिन उसके कानों में अभी ठाकुर साहब का वाक्य गूंज रहा था—

'भई वाह ! कितना सुन्दर और जवान निकला है आपका बेटा।'

एकाएक नौकरानी की आवाज सुनकर रचना बुरी तरह उछल पड़ी···नौकरानी मुंह दबाकर हंस पड़ी—

'ऐ छोटी मालकिन···इतनी बुरी तरह डर गईं ?'

'क्या है ?' रचना ने कृत्रिम रोष से कहा।

'मालिक बुला रहे हैं आपको।'

'हां···जी—आती हूं।'

नौकरानी हंसती हुई चली गई। रचना का दिल और अधिक जोर-से धड़कने लगा—वह सोच रही थी कि डैडी के सामने कैसे जाएगी ?' बड़ी मुश्किल से उसने अपने-आपको संभाला और दबे पांव से ठाकुर साहब के कमरे में प्रविष्ट हुई। ठाकुर साहब द्वार की ओर ही देख रहे थे···रचना ने पहली ही दृष्टि में देखा कि कोई तस्वीर मेज पर पड़ी थी किन्तु उसने तस्वीर की ओर ध्यान नहीं दिया···ठाकुर साहब ने कहा—

'आओ बेटी।'

'आपने मुझे बुलाया था डैडी ?'

'हा बेटी।'

'अब तबीयत कैसी है ?'

'ठीक है—डाक्टर ने पूरे चार महीने लेटे रहने को कहा है।'

रचना पट्टी पर बैठ गई और ठाकुर साहब के सीने पर सिर रखकर बोली—

'वह तो अच्छा हुआ डैडी···इसलि[illegible] कि आप आराम तो करेंगे···वरना आ[illegible] आराम का नाम भी तो नहीं लेते थे···सु[illegible] से जो घर से निकलते थे तो रात ही [illegible] दिखाई देते थे।'

'बेटी ! करोड़ों का कारोबार है··· उधर ध्यान न दूं तो कौन संभालेगा ?'

'काम संभालने वाले बहुतेरे हैं···मु[illegible] आपकी सेवा का सुअवसर तो मिलेगा क[illegible] से-कम।'

ठाकुर साहब हंसने लगे और बोले—

'एक बात पूछूं बेटी।'

'पूछिए।'

'बेटी—इस दुनिया में मेरा तुम्ह[illegible] सिवा कोई भी नहीं है···मैं ही तुम्हारा ब[illegible] भी हूं, मां भी हूं और बहन-भाई भी··· लिए मैं सीधे ही तुमसे पूछ सकता हूं।'

'मैं समझती नहीं डैडी।'

'बेटी···अब यह समझो कि मैं [illegible] महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहूंगा तो का[illegible] बार की क्या दशा हो जाएगी···अगर [illegible] कोई बेटा होता तो मेरी अनुपस्थिति[illegible] काम-काज की देखभाल करता—अब[illegible] बस एक ही आस है कि तुम्हारे हाथ [illegible] हो जाएं···दामाद भी तो बेटे समान[illegible] होता है।'

डैडी···!'

रचना ने शर्माकर ठाकुर साहब[illegible] सीने में सिर छिपा लिया। ठाकुर साह[illegible] स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते [illegible] कहा—

'बेटी ! इसलिए चाहता हूं कि ज[illegible] से-जल्दी तेरे हाथ पीले कर दूं···लेकिन[illegible] मेरी इकलौती बेटी हो···मेरे कलेजे[illegible] टुकड़ा हो···मेरा जीवन, मेरा सब कुछ[illegible] ही हो···मैं तुम्हारी खुशी के बिना [illegible] कदम नहीं उठा सकता बेटी···अगर [illegible] किसी को जीवन साथी के रूप में चुना[illegible] तो मुझे साफ-साफ बता दे—'

'डैडी—।'

रचना ने और भी संकोच से [illegible] साहब के सीने में सिर छिपा लिया। [illegible] साहब ने फिर कहा—

'संकोच की कोई बात नहीं बेटी···

साफ-साफ बता दे···मुझे तेरी हर इच्छा स्वीकार होगी।'

रचना निरन्तर ठाकुर साहब के सीने में मुंह छिपाए रही। ठाकुर साहब ने कुछ देर तक प्रतीक्षा की फिर बोले।

'देख बेटी···मैं तेरी इच्छा के बिना कोई कदम नहीं उठाऊंगा···लेकिन जब तक मुझे तेरी इच्छा नहीं मालूम होगी मैं क्या कदम उठा सकता हूं।'

रचना ने धीरे-धीरे साहस बटोरकर कहा।

'डैडी—आपकी बेटी ने आपकी ओर से मिली हुई स्वतन्त्रता और आपके लाड-प्यार का कभी अनुचित लाभ नहीं उठाया ···आपकी प्रसन्नता मेरी प्रसन्नता है··· आप जिसको भी मेरे लिए चुन लेंगे मेरे लिए वही सब कुछ है—'

'बेटी···' ठाकुर साहब की आवाज खुशी और भावना से कांप उठी, 'तू सचमुच ऐसी बेटी है जिसके पिता को गर्व से गर्दन उठाकर चलना चाहिए।'

कहते-कहते ठाकुर साहब की आवाज भारी हो गई—क्षण भर रुककर उन्होंने कहा—

'बेटी! भगवान् ने मुझे बहुत-कुछ दिया है···जो कुछ मेरे पास है तेरे ही लिए है··· इसीलिए किसी अमीर घराने का जीवन-साथी चुनने के स्थान पर मैंने गरीब घराने का शरीफ और गुणवान लड़का ढूंढ़ा है—अपने मुनीम जी का लड़का—मुझे लगता है तू भी उसे पसन्द करेगी क्योंकि वह पढ़ा-लिखा भी है, होनहार भी है और सुन्दर भी —मुनीम जी उसकी तस्वीर छोड़ गए हैं—तू इसे देख ले।

'डैडी—!' रचना फिर लजा गई।

'बेटी···इसमें लज्जा की क्या बात है? आखिर तुझे ही उसके साथ जीवन बिताना है—अगर तू एक बार देख लेगी तो इसमें हानि ही क्या है?'

रचना ने लाज से गर्दन मोड़ी और ठाकुर साहब के सीना पर सिर रखे हुए ही उसने मेज पर रखी तस्वीर को देखा—और दूसरे ही क्षण उसे यूं अनुभव हुआ जैसे एकाएक हजारों शहनाइयां बज उठी हों··· हजारों रंग के फूल एक साथ खिल उठे हों जैसे हजारों झरनों के छींटे उड़-उड़कर उसकी आतमा को ठंडक पहुंचा रहे हों···और वह किसी परी के समान उड़ती चली जा रही हो···

मेज पर दशरथ की तस्वीर पड़ी हुई थी—वह दशरथ जो उसके साथ कालिज के ड्रामे में 'हीरो' बना था—जिसने उसके पति का पात्र निभाया था···और ड्रामा की समाप्ति पर भी वह उसके सीने से लगी रह गई थी—वही दशरथ वास्तविक जीवन में उसका पति बनने वाला था···

फिर रचना के कानों से ठाकुर साहब की आवाज टकराई···

'बेटी! कैसा लगा तुझे दशरथ?'

रचना बुरी तरह उछल पड़ी और उसके होंठों से फिर कंपकंपाती आवाज निकली···

'डैडी—।'

और फिर—दूसरे ही क्षण उठकर भागती हुई वह अपने कमरे में आ गई और बिस्तर पर गिर गई—उसका हृदय अत्यधिक प्रसन्नता से धड़क रहा था···शरीर के रोए-रोए में गुदगुदी-सी हो रही थी···सांसों में संगीत फूट रहा था। बार-बार उसकी कल्पना में दशरथ का चेहरा उभरता और वह विभोर हो उठती।

□ रूपा कार से उतरकर बरामदे में पहुंची तो एक नौकर निकलता हुआ दिखाई दिया। रूपा को देखकर उसने शिष्टतापूर्वक नमस्ते कही और रूपा ने पूछा—

'रचना कहां है?'

'अपने कमरे में—आप ही की राह देख रही हैं।'

रूपा तेज-तेज चलती हुई अपने कमरे में पहुंची तो रचना फूलदान में फूल सजा रही थी···रूपा ने एक लम्बी और गहरी सांस ली और बोली—

'अरे···तूने तो मुझे डरा ही दिया था।'

'अरे—' रचना चौंककर रूपा की ओर बढ़ी, 'तू आ गई?'

'न आती तो क्या करती? ड्राईवर गाड़ी लेकर गया और कहने लगा—छोटी मालकिन ने अभी बुलाया है—मेरे तो हाथ-पैर फूल गये थे—अब अंकल की तबीयत कैसी है?'

'उनकी तबीयत तो ठीक है—डाक्टर ने उन्हें चार महीने के आराम का परामर्श दिया है···पूरा आराम।'

'लेकिन तूने मुझे इतना अर्जेन्ट क्यों बुला भेजा।'

'बता दूंगी...इतनी बेचैन क्यों है तू?'

'अरे···यहां प्राण निकलते-निकलते रह गये और तू कहती है बेचैन क्यों है?'

रचना हंसती हुई रूपा से लिपट गई और बोली—

'तू सुनेगी तो खुश हो जाएगी।'

'आखिर ऐसी क्या बात है? क्या तेरी शादी हो रही है?'

'हां—सचमुच शादी हो रही है।'

रूपा उछल पड़ी और रचना से अलग होकर आश्चर्य से बोली—

'क्या···सचमुच तेरी शादी होने वाली है?'

'हां—सचमुच।'

'कब?'

'कल—।'

'क्या?'

रूपा एक असीम आश्चर्य से उछल पड़ी—

'इसी लिए तो डैडी ने तुझे बुलाने के लिए कहा है···मेरी सहेलियों में और कौन है जो शादी का प्रबन्ध करने यहां आएगी?'

'लेकिन इतनी जल्दी?'

'वह डैडी को अटैक हुआ है ना—इसलिए वह चाहते हैं कि जल्दी-से-जल्दी मुझे दुल्हन के रूप में देख लें—भगवान उनकी स्नेहमयी छाया हजार बरस तक मुझ पर रखें।'

'ओह—लेकिन कहां बात तय हुई है? लड़का कौन है? कैसा है? पढ़ा-लिखा है या अनपढ़···गरीब है या अमीर—? तू उसे पहले से जानती है या नहीं?'

'तेरी सब बातों का मेरे पास एक ही उत्तर है।'

'क्या?'

'रचना ने तकिए के नीचे से तस्वीर निकाली···और उसे पीछे छिपाती हुई मुस्कराकर बोली—

'जानती तो उसे तू भी है—लेकिन बूझो तो जानूं?'

'मैं जानती हूं!' रूपा ने आश्चर्य से पूछा, 'ऐसा कौन लड़का है?'

'मस्तिष्क पर बल दो—।'

'अरे छोड़—यहां मस्तिष्क को कष्ट देने की क्या जरूरत है—तू तस्वीर दिखा।'

(शेष आगामी अंक)